04 - नारी मन एवं ग्राम्यजीवन से ओतप्रात

05 - किसान और गरीबों के कलाकार फ्रांस्वा मिले

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 01 मार्च, 2026

06 -संगठन की शक्ति प्रशिक्षित और समर्पित कार्यकर्ताओं से ही बढ़ती है: रणवीरसिंह रावत

07 - सिनेमा की होली में मोहब्बत के रंग

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 179, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

फोटो- जगदीश कौशल

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

इजरायल-अमेरिका ने एक साथ ईरान पर किया हमला

40 स्कूली छात्रों समेत ईरान में 55 की मौत

● ईरान के रक्षामंत्री की मौत ● ईरान ने भी इजराइल-दुबई, कतर-बहरीन और यूएई में अमेरिकी मिलिट्री बेस पर अटैक,अमेरिकी मिलिट्री बेस में हड़कंप,

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। इजराइल ने शनिवार सुबह ईरान की राजधानी तेहरान समेत कई शहरों पर हमला कर दिया। इरना न्यूज एजेंसी के मुताबिक, इन हमलों में 40 छात्राएं समेत 55 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 45 लोग घायल हैं। इसके जवाब में ईरान ने भी इजराइल पर जवाबी हमले शुरू कर दिए हैं। बताया जा रहा कि ईरान के रक्षामंत्री की भी मौत हो गई है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान ने पलटवार करते हुए करीब 400 मिसाइलें दागीं हैं। ईरान ने इजराइल के अलावा कुवैत, कतर, बहरीन और सऊदी अरब में मौजूद अमेरिकी बेस पर भी हमला किया है। ईरान ने यूएई के सबसे ज्यादा आबादी वाले शहर दुबई को भी निशाना बनाया है। दरअसल, इजराइल ने ईरान के खुफिया मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, सुप्रीम लीडर खामेनेई का ऑफिस

और ईरान के परमाणु ऊर्जा संगठन को निशाना बनाया। हमले के बाद खामेनेई को सुरक्षित जगह शिफ्ट कर दिया गया है।

● **बैलिस्टिक मिसाइल पर चल रहा था विवाद-** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान पर हमले की धमकी दी थी। अमेरिकी सेना पहले ही ईरान को चारों तरफ से घेर चुकी है। इससे पहले शुक्रवार को अमेरिका ने अपने नागरिकों से तुरंत इजराइल छोड़ने के लिए कहा था। ईरान और अमेरिका के बीच चल रही परमाणु समझौते की बातचीत में बैलिस्टिक मिसाइल प्रोजेक्ट सबसे बड़ा विवाद का मुद्दा बन गया है। ईरान इस पर बिल्कुल भी समझौता करने को तैयार नहीं है और इसे अपनी रेड लाइन मानता है। ईरान का कहना है कि यह उसके बैलिस्टिक मिसाइल प्रोग्राम रक्षा के लिए जरूरी है। ईरान का कहना है कि जून 2025 में इजराइल और अमेरिका ने ईरान के परमाणु साइटों पर हमला किया, तब ईरान की मिसाइलों ने ही उसकी रक्षा की।

अमेरिका और इजराइल का जॉइंट मिलिट्री एक्शन

इजराइल ने ईरान के खिलाफ अपने नए अभियान का नाम लियोनस् रोर (शेर की दहाड़) रखा है। वहीं अल जजीरा ने अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से बताया कि यह अमेरिका और इजराइल का जॉइंट मिलिट्री ऐक्शन है। यह हमला ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु हथियारों को लेकर चल रही बातचीत के बीच हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान पर हमले की धमकी दी थी। उन्होंने कहा कि इस कार्रवाई का मकसद अमेरिका और उसके लोगों को खतरे से बचाना है। ट्रम्प के मुताबिक, अमेरिकी सेना ईरान की मिसाइलों को तबाह करने और उसके मिसाइल प्रोग्राम को खत्म करने की कोशिश कर रही है।

आंध्र की पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट,20 की मौत

● 6 गंभीर घायल,धमाके की आवाज 5 किमी दूर तक सुनाई दी

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के काकीनाडा जिले के वेटलापलेम गांव में शनिवार को पटाखा बनाने वाली यूनिट में धमाका हो गया। हादसे में 20 लोगों की मौत हो गई, जबकि 6 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। धमाके के समय यूनिट में 20 से ज्यादा कर्मचारी काम कर रहे थे। स्थानीय लोगों ने बताया कि दोपहर करीब 2 बजे ब्लास्ट हुआ। धमाके इतना भीषण था कि इसकी आवाज 5 किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। इसके बाद ग्रामीण घटनास्थल पर पहुंचे और हादसे में घायल लोगों को अस्पताल भेजना शुरू किया। पुलिस अधिकारी ने बताया- धमाका इतना तेज था कि लाशें पास के धान के खेतों में जाकर गिरीं। हरे-भरे धान के खेतों के बीच डरावना मंजर देखने को मिला, जब स्थानीय लोग बाराकालू, यानी खाद की बोरियों से बनी चादरों में लाशें ले जाते दिखे।

इजरायल से वापस दिल्ली लौटी एआई की फ्लाइट

कंपनी ने कहा-हमारे लिए यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजरायल और ईरान के बीच एक बार फिर से संघर्ष शुरू हो गया है। इजरायल ने ईरान के सैन्य ठिकानों पर हमला किया। ईरान में जवाबी कार्रवाई की धमकी दी है। इसे देखते हुए इजरायल ने अपना एयर स्पेस क्लोज कर दिया है। इस बीच दिल्ली से तेल अवीव के लिए उड़ी एयर इंडिया की एक फ्लाइट वापस आ गई है। एयर इंडिया ने बताया कि उसकी उड़ान संख्या एआई 13 दिल्ली से तेल अवीव के लिए उड़ी थी लेकिन इजरायल का एयर स्पेस बंद होने के कारण यह वापस आ गई है। एयर इंडिया के प्रवक्ता ने कहा कि इजरायल का एयर स्पेस बंद होने के कारण यात्रियों और चालक दल की सुरक्षा को देखते हुए यह फैसला लिया गया है। प्रवक्ता ने कहा कि कंपनी के लिए यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। एयरलाइन का कहना है कि वह स्थिति पर नजर बनाए हुए है और सेफ्टी एसेसमेंट के बाद ऑपरेशन के बारे में आगे फैसला लिया जाएगा।

सुप्रभात

इस जीवन में तुम तक
न पहुंच सकूंगा
जितना ढूंढ़ता हूँ तुम्हें
उतना गुम हुआ जाता हूँ
जीवन के पूर्वाद्ध से
उत्तरार्द्ध तक
एक पहेली की तरह
मेरे लिए,सबके लिए
शायद माँ के लिए भी
बातें तुम्हारी
तुम्हारे बालों की तरह ही
घुंघराली रहीं
भीतर ही भीतर गुमटती रहतीं
वेदनाएं हम तक राह ना पा सकीं
उन्हें तुमने सदा निजी संपत्ति माना
जब भी कुछ व्यक्त हुआ
क्रोध झिड़की मौन या दुलार
इन सबमें
तुम्हारा अपरिमित स्नेह
ही परावर्तित हुआ

तुम सदा उस वट वृक्ष की तरह रहे
जिसने वृद्ध होने के पश्चात भी
अपनी जटाएं
हमारी जड़ें बनने दीं

एक पुत्र होने के नाते भी
क्या दे सकता हूँ मैं तुम्हें
पिता के छायारत प्रेम का रूपांतर
किस ईश्वर की गोद में मिलेगा?

- कौशलेंद्र सिंह

प्रधानमंत्री मोदी ने अजमेर से राष्ट्रीय एचपीवी टीकाकरण अभियान का किया शुभारंभ

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पूरे देश में प्रिवेंटिव हेल्थ केयर को सशक्त करने निरंतर हो रहे हैं कार्य: मुख्यमंत्री डॉ यादव

भोपाल (नप्र)। देश में महिलाओं एवं बालिकाओं के स्वास्थ्य संरक्षण की दिशा में एक बड़ा और दूरदर्शी कदम उठाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान के अजमेर से राष्ट्रीय एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया। 3 माह तक चलने वाले अभियान में देश में 14 से 15 वर्ष आयु वर्ग की 1

करोड़ किशोरी बालिकाओं का टीकाकरण किया जाएगा। मध्यप्रदेश में 8 लाख किशोरी बालिकाओं का टीकाकरण किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नई दिल्ली से वर्चुअली संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी का आभार व्यक्त किया और कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में पूरे देश में प्रिवेंटिव हेल्थ केयर को सशक्त करने की दिशा में निरंतर कार्य हो रहा है। इसी कड़ी में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम हेतु एचपीवी टीकाकरण अभियान प्रारंभ किया गया है। मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य के क्षेत्र में दृढ़ता के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि कि बाजार में एचपीवी वैक्सीन की कीमत लगभग 4 हजार रुपये प्रति डोज है, लेकिन सरकार यह टीका 14-15 वर्ष की सभी पात्र बालिकाओं को पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध करा रही है। उन्होंने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों और अभिभावकों से अपील की कि इस अभियान को जनआंदोलन बनाकर सफल बनाएं।

सर्वाइकल कैंसर मुक्त मध्यप्रदेश और स्वस्थ, आत्मनिर्भर नई पीढ़ी का निर्माण सरकार का संकल्प: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

मध्यप्रदेश में डॉ कैलाशनाथ काटजू हॉस्पिटल भोपाल से अभियान का शुभारंभ उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आज का दिन स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक है। महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के बाद सर्वाइकल कैंसर दूसरा सबसे सामान्य कैंसर है, जिसकी प्रिवेलेंस दर लगभग 1 लाख में 156 है। एचपीवी वैक्सीनेशन भविष्य में सर्वाइकल कैंसर को नियंत्रित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। बीमारी होने के बाद इलाज करने

से बेहतर है कि हम उसे होने ही न दें। यह अभियान प्रिवेंशन केयर की दिशा में एक बड़ा कदम है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर मुक्त मध्यप्रदेश और स्वस्थ, आत्मनिर्भर नई पीढ़ी का निर्माण सरकार का संकल्प है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रदेश में निरोगी काया अभियान, सिकल सेल उन्मूलन मिशन, स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान, स्वस्थ यकृत मिशन सहित स्वास्थ्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के समर्पण, जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों की सक्रिय सहभागिता और नागरिकों की जागरूकता से हम निःसंदेह अभियान के लक्ष्य को समय से पूर्व प्राप्त करेंगे। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य की सतत देखभाल और मानकों में सुधार के लिए स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और नियमित स्वास्थ्य जांच अहम है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में हब एंड स्पोक मॉडल पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में 85 प्रकार की जांचें उपलब्ध कराई जा रही हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 01 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

राहुल गांधी का वित्त मंत्री सीतारमण को लेटर

- लिखा-एक्स-सर्विसमेन कंट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम के लिए पर्याप्त बजट दें

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को पत्र लिखा है। उन्होंने सशस्त्र बलों के पूर्व सैनिकों से जुड़े दो महत्वपूर्ण मुद्दों पर हस्तक्षेप की मांग की है। 25 फरवरी 2026 को लिखे लेटर में राहुल ने एक्स-सर्विसमेन कंट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम के लिए पर्याप्त बजट उपलब्ध कराने और दिव्यांगता पेंशन पर लगाए गए नए आयकर प्रावधान को वापस लेने मांग की। राहुल ने लिखा है कि एक्स-सर्विसमेन कंट्रीब्यूटरी हेल्थ स्कीम का उद्देश्य पूर्व सैनिकों को बेहतर

स्वास्थ्य सुविधाएं देना है, लेकिन यह गंभीर वित्तीय संकट से जूझ रही है। उन्होंने कहा कि जिन्होंने देश की सेवा की, वे आज खुद को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। इस लेटर एक कॉपी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को भी भेजी गई है। दरअसल, राहुल गांधी डिफेंस की पार्लियामेंट स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य हैं। वे लगातार एक्स-सर्विसमेन के लिए सरकारी सुविधाएं बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। लोकसभा नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि जब कोई दिव्यांग सैनिक सेवा में बने रहने का विकल्प चुनता है या उससे अनुरोध किया जाता है तो वह चोट के बावजूद निस्वार्थ भाव से भारत की सेवा करता है। कांग्रेस नेता ने कहा कि जिस चीज की प्रशंसा की जानी चाहिए उस पर कर लगाना अपमानजनक है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि पूर्व सैनिकों के एक प्रतिनिधिमंडल से मेरी मुलाकात हुई और उन्होंने इन मुद्दों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। अपनी ही सरकार द्वारा अपमानित किए जाने की उनकी भावनाओं को सुनना दुखद था।

पूर्वोत्तर भारत को बंगाल की खाड़ी से जोड़ेगा जापान

- हिंद महासागर तक कनेक्टिविटी में भी मदद की है तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण पूर्वी एशिया का प्रवेश द्वार मानते हुए क्षेत्र के आठों राज्यों में कनेक्टिविटी पर बहुत जोर दे रही है। यह मोदी सरकार की ऐक्ट ईस्ट पॉलिसी पर आधारित है। भारत की इस नीति में और ज्यादा सहायता के लिए पुराना और भरोसेमंद मित्र जापान

सामने आया है। जापान ने कहा है कि वह पूर्वोत्तर भारत को बंगाल की खाड़ी से लेकर हिंद महासागर तक कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने में मदद के लिए तैयार है। जापान के उप विदेश मंत्री होरी इवाओ ने शुक्रवार को कहा कि उनका देश पूर्वोत्तर भारत को बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर तक कनेक्टिविटी दिलाने में मदद करने के लिए तैयार है। मेघालय की राजधानी शिलॉन्ग में एक फॉरन पॉलिसी कॉनक्लेव (सिक्स्थ इंडिया-जापान इंटेलेक्चुअल कॉन्क्लेव) में उन्होंने यह बात कही।

बोत्सवाना से कूनो नेशनल पार्क पहुंचे 9 चीते

कूनो में चीतों की पुनर्बसाहट जैव विविधता संरक्षण की दिशा में बडा कदम : केन्द्रीय मंत्री श्री यादव

श्योपुर (नप्र)। एमपी के कूनो नेशनल पार्क में शनिवार सुबह 9 और चीते लाए गए। दक्षिण अफ्रीकी देश बोत्सवाना से 6 मादा और 3 नर चीता वायुसेना के विशेष विमान से पहले ग्वालियर, फिर हेलीकॉप्टर से कूनो नेशनल पार्क लाए गए। कूनो में अब चीतों का कुनबा 36 से बढ़कर 45 गया है। गांधी सागर अभयारण्य के तीन चीतों को मिलाकर देश में 48 चीते हैं।

केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव ने कहा है कि बोत्सवाना से कूनो नेशनल पार्क में लाये गये चीतों से बोत्सवाना और भारत के बीच जैव विविधता संरक्षण की एक ऐतिहासिक साझेदारी प्रारंभ हुई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विशेष पहल और प्रयासों से भारत में चीतों के प्रतिस्थापन की योजना पूरी तरह से सफल रही है। बायोडायवर्सिटी कंजर्वेशन की दिशा में कई देश साथ आये हैं। भारत में चीता प्रोजेक्ट को साढ़े तीन साल का समय हो गया है। कूनो नेशनल पार्क में चीतों का कुनबा निरंतर बढ़ रहा है, वर्तमान में भारत में चीतों की संख्या 48 हो गई है, जिनमें 45 कूनो नेशनल पार्क और 3 गांधी सागर अभ्यारण में हैं। केन्द्रीय वन मंत्री ने कहा कि भारत के प्रयासों से विश्व में जैव विविधता संरक्षण के लिए कार्य किया जा रहा है और 97 देश इस मंच के सदस्य बन गये हैं।

केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री यादव ने

बोत्सवाना से आये 9 चीतों में से तीन चीतों को प्रतीकात्मक रूप से क्वारंटीन के लिए बनाये गये बाड़ों में रिलीज किया। भारत में चीतों की पुनर्बसाहट के लिए तीन वर्ष पूर्व शुरू हुए चीता प्रोजेक्ट के तहत बोत्सवाना से लाये गये 9 चीते शनिवार को सुबह लगभग 9.30 बजे कूनो नेशनल पार्क पहुंचे। वायुसेना के तीन हैलीकॉप्टर से ग्वालियर एयरपोर्ट से इन चीतों को कूनो नेशनल पार्क में एयरलिफ्ट किया गया। इन चीतों में 6 मादा और 3 नर चीते शामिल है। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री ने चीता रिलीज कार्यक्रम उपरांत बोत्सवाना से आये चीता विशेषज्ञ दल से भेंट कर चर्चा की, साथ ही उन्हें कूनो नेशनल पार्क की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किये।बोत्सवाना से 9 चीतों के आने के बाद अब प्रदेश में चीतों की कुल संख्या 48 हो गई है, इनमें से 45 कूनो नेशनल पार्क में और 3 गांधी सागर अभयारण्य में हैं।

जेनेटिक विविधता और संतुलन पर जोर

जानकारों के मुताबिक, नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका के बाद अब बोत्सवाना के चीतों के शामिल होने से कूनो में जेनेटिक विविधता और मजबूत होगी। कूनो में अब वयस्क चीतों की संख्या में 18 मादा और 16 नर शामिल हैं। सभी 9 चीतों को अगले एक महीने तक विशेष क्वारंटीन बाड़ों में विशेषज्ञों और डॉक्टरों की सख्त निगरानी में रखा जाएगा। तीन अलग-अलग देशों के चीतों का एक साथ होना इस प्रोजेक्ट की लंबी अवधि की सफलता के लिए निर्णायक साबित होगा।

केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव विशेष विमान से ग्वालियर, फिर हेलीकॉप्टर के जरिए कूनो पहुंचे। सुबह करीब 9.20 बजे उन्होंने प्रतीकात्मक रूप से क्रेट का हैंडल घुमाकर दो चीतों को क्वारंटीन बाड़े में रिलीज किया।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस नई खेप में मादा चीतों की अधिक संख्या से कूनो में लिंगानुपात बेहतर होगा, जिससे भविष्य में प्राकृतिक प्रजनन की संभावनाएं और प्रबल होंगी।

शादी करने वाले हैं धीरेंद्र शास्त्री, बोले-जल्द खुशखबरी देंगे

मां से कहा- लड़की देखना शुरू करो; गुरु आज्ञा पर माता की पसंद से होगा विवाह

खजुराहो (नप्र)। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने अपनी शादी को लेकर कहा है कि शादी निश्चित रूप से होगी और जल्द ही अच्छी खबर मिलेगी। उन्होंने कहा कि गुरु की आज्ञा मिलने के बाद वह जल्द ही माता की पसंद से ही विवाह करेंगे।

धीरेंद्र शास्त्री ने स्पष्ट करते हुए कहा कि गुरु जी की आज्ञा हुई है। हमने माता जी को आज ही बोला है लड़की देख लो। उन्होंने आगे कहा कि उनके जीवन का सिद्धांत रहा है कि जो बातें उन्होंने कही हैं, वे देर से ही सही, पूरी हुई हैं।

धीरेंद्र शास्त्री 21 दिनों तक बद्रीनाथ में साधना करेंगे- शास्त्री ने बताया कि वह 21 दिनों तक बद्रीनाथ में साधना करेंगे, जिसमें पांच दिन की विशेष तपस्या शामिल होगी। इस साधना के पूर्ण होने के बाद शादी की प्रक्रिया में तेजी आने की संभावना है।

रायसेन जिला अस्पताल के गेट पर महिला की डिलीवरी

जननी एक्सप्रेस चालक गेट पर छोड़कर फरार, स्टाफ ने 5 मिनट में संभाला

रायसेन (नप्र)। रायसेन जिला अस्पताल के मुख्य गेट पर एक गर्भवती महिला की डिलीवरी का वीडियो सामने आया है। यह घटना शुक्रवारङ्कशनिवार की दरमियानी रात करीब 3ः15 बजे की बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार, अमरावत निवासी 28 वर्षीय मुन्नी बाई को जननी एक्सप्रेस वाहन का चालक जिला अस्पताल के गेट पर छोड़कर चला गया, जिसके बाद महिला ने वहीं एक बच्ची को जन्म दे दिया।

बताया जा रहा है कि प्रसूता का पति शैतान अस्पताल के अंदर पर्चा बनवाने गया हुआ था। इसी दौरान गेट पर ही महिला को प्रसव पीड़ा तेज हो गई और डिलीवरी हो गई। मौके पर मौजूद कुछ लोगों ने इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो भी बनाया।

स्टाफ ने 5 मिनट में जच्चा-बच्चा को कराया सुरक्षित भर्ती- घटना की जानकारी मिलते ही अस्पताल का स्टाफ मौके पर पहुंचा और 3ः20 बजे, यानी डिलीवरी के लगभग 5 मिनट बाद, जच्चा और बच्चा दोनों को सुरक्षित रूप से अस्पताल के अंदर शिफ्ट किया गया। बताया गया कि यह महिला की तीसरी डिलीवरी है। पहले उसकी दो बेटियां हैं और इस बार भी उसने एक बेटी को जन्म दिया है।

सिविल सर्जन बोले-ड्राइवर की थी अंदर शिफ्ट करने की जिम्मेदारी- जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ. यशपाल बाल्यान ने बताया कि प्रसूता के अनुसार वह काफी देर से जननी एक्सप्रेस को कॉल कर रही थी, लेकिन वाहन समय पर नहीं पहुंचा। बाद में जब वाहन आया तो चालक महिला को अस्पताल के गेट पर ही छोड़कर चला गया, जबकि उसकी जिम्मेदारी महिला को अंदर शिफ्ट करना और पर्चा बनवाने की भी थी।फिलहाल जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ और सुरक्षित हैं।

काशी में रंगोत्सव, जलती चिताओं की भस्म से होली

- नरमुंड,चश्मा लगाकर आए संन्यासी,डमरू की भारी गूंज

वाराणसी (एजेंसी)। जलती चिताएं, रोते-बिलखते लोग और चिता की राख से होली खेलते नागा साधु-संन्यासी। यह नजारा इस समय काशी के मणिकर्णिका घाट पर देखने को मिला। यहां शनिवार को मसाने की होली खेली गई। कोई गले में नरमुंडों की माला डाले था, तो कोई डमरू की थाप पर नाचता दिखाई दिया। घाट पर जश्न के बीच से शवयात्राएं भी गुजरती रहीं। रंग और चिता की राख में सराबोर होकर विदेशी पर्यटक भी झूमते नजर आए। शनिवार को मसाने की होली का रंगोत्सव डमरू वादन से शुरू हुआ। डमरू की गूंज के बीच साधु-संन्यासी मणिकर्णिका घाट पहुंचे और पूजन किया। भस्म, रंग, गुलाल और अबीर बाबा मसान नाथ को अर्पित किए। इसके बाद भस्म की होली खेली। मसाने की होली खेलने के लिए 3 लाख से ज्यादा श्रद्धालु और पर्यटक काशी पहुंचे थे। आमतौर पर जिस चिता की राख से लोग दूरी बनाते हैं, आज उसी राख में लोग श्रद्धा और आस्था के साथ सराबोर नजर आए। पुलिस ने मणिकर्णिका घाट की ओर जाने वाला रास्ता बंद कर दिया है। रस्सी लगाकर पुलिसकर्मी तैनात हैं। इस दौरान लोगों की पुलिस से बहस हो गई। मसाने की होली के बीच मणिकर्णिका घाट पर पांडेयपुर निवासी दुर्गा देवी का शव अर्थी से गिर पड़ा।

कांग्रेस के कुकर्मों को देश कभी माफ नहीं करेगा

- पीएम बोले-एमएमसी है यानि मुस्लिम लीगी माओवादी कांग्रेस

अजमेर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान के अजमेर से ह्यूमन पैपिलोमा वायरस वैक्सीनेशन अभियान की शुरुआत की। जनसभा में मोदी ने कहा- कांग्रेस को कुकर्मों के लिए देश कभी माफ नहीं करेगा। पूरे देश में कांग्रेस लगातार हार रही है और गुस्से में इसका बदला भारत को बदनाम करके ले रही है। कभी कांग्रेस आईएनसी यानी इंडियन नेशनल कांग्रेस थी। अब आईएनसी नहीं बची है। आज वो एमएमसी बन गई है। एमएमसी यानी मुस्लिम लीगी माओवादी कांग्रेस। शनिवार को पीएम मोदी अजमेर के कायड़ विश्रामस्थली में सभा को

संबोधित कर रहे थे। इससे पहले अभियान की शुरुआत में मनीषा रावत, भूमिका, पूर्वी अग्रवाल, चंचल, चिड़िया मेघवंशी को वैक्सीनेशन लगाई गई।

- **दुनिया के सामने कांग्रेस ने देश को बेइज्जत किया-** हाल ही में दिल्ली में दुनिया का सबसे बड़ा एआई सम्मेलन हुआ। इसमें कई देशों के पीएम-राष्ट्राध्यक्ष, मंत्री आए। दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियों के लीडर एक छत के नीचे इकट्ठे हुए। भारत की खुले मन से प्रशंसा की। हताशा, निराशा में डूबी कांग्रेस ने दुनिया भर के मेहमानों के सामने देश को बदनाम करने की कोशिश की। इन्होंने विदेशी मेहमानों के सामने देश को बेइज्जत किया। पीएम मोदी ने कहा- नदियों को जोड़ने का अभियान शुरू किया है।

अंडमान-निकोबार में और भी ज्यादा मजबूत होगी सेना

- उपराज्यपाल एडमिरल डीके जोशी ने बताया पूरा प्लान

नए एयरपोर्ट से शुरू होगी नई उड़ाने

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में भारतीय सेना की स्थिति और भी ज्यादा मजबूत होने जा रही है। केंद्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल रिटायर्ड एडमिरल डीके जोशी ने 15 हजार करोड़ की लागत से द्वीप समूह पर बनाए जा रहे एयरपोर्ट की समय सीमा के बारे में पूरी जानकारी दी है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले तीन वर्षों के अंदर इस एयरपोर्ट से उड़ाने प्रारंभ हो जाएंगी। रिपोर्ट्स के अनुसार, हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए और मलक्का जलडमरूमध्य पर और भी कड़ी निगरानी करने के लिए इस एयरपोर्ट का निर्माण किया जा रहा है।

- अगले तीन वर्षों में

- **नए सैन्य हवाई अड्डे के तौर पर होगा विकसित-** ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, ग्रेट निकोबार द्वीप पर बनाया जाने वाला यह नया एयरपोर्ट एक आर्मी एयरपोर्ट के तौर पर विकसित किया जाएगा। इस परियोजना के तहत दो मौजूदा सैन्य हवाई पट्टियों के रनवे का भी विस्तार किया जाएगा, ताकि हिंद महासागर में चीन की बढ़ती मौजूदगी का प्रभावी जवाब दिया जा सके। यह नया एयरपोर्ट द्वीप समूह पर टूरिज्म को भी बढ़ाएगा।

भारत की सीमाएं होंगी अभेद्य, बड़ी है तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार रणनीतिक और सामरिक सुरंगों का जाल बिछाकर भारतीय सीमाएं अभेद्य बनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। जम्मू-कश्मीर से लेकर पूर्वोत्तर में बनने वाली ये सुरंगें न सिर्फ चीन और पाकिस्तान की सीमाओं पर भारत की सैन्य ताकत को दोगुना कर देंगी बल्कि हिमालय के सुदूर दुर्गम क्षेत्र में हर मौसम में सड़क संपर्क भी मुहैया कराएंगी। अन्य राज्यों की सुरंग परियोजनाएं सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देंगी। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सरकार ने छह सुरंग परियोजनाओं की लंबित डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) का कार्य फास्ट ट्रैक पर लाने के निर्देश दिए हैं। मौजूदा पाइपलाइन में सबसे अहम शिंकुला सुरंग (4.1 किलोमीटर) है। 15,800 फीट की ऊंचाई पर बनने वाली यह सुरंग दुनिया की सबसे ऊंची सुरंग होगी। यह लद्दाख को निम्मू-पदम-दारचा मार्ग के जरिये तीसरा वैकल्पिक ऑल-वेदर रूट प्रदान करेगी। यह मार्ग सीमा से सुरक्षित दूरी पर होने के कारण सामरिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। सुरंग का प्री-कंस्ट्रक्शन (शुरुआती खुदाई) इस साल मध्य तक शुरू करने का लक्ष्य है।

- लद्दाख में बनेगी दुनिया की सबसे ऊंची सुरंग

पूर्वोत्तर में सुरंगों से सेना की आवाजाही आसान होगी- अरुणाचल के तवांग सेक्टर में स्मल्दर सुरंग सेना के भारी तोपखाने और मिसाइल सिस्टम को सैटेलाइट की नजरों से बचाकर एलएसी तक पहुंचाने में गेम-चेंजर साबित होंगी। इनका रूट फाइनल हो चुका है, वर्ष 2027 तक काम शुरू होगा। मणिपुर की मोरहे-थुइबुल सुरंग दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक और सैन्य आवाजाही को नई गति देगी। पूर्वोत्तर में मणिपुर मोरहे-थुइबुल सुरंग भारत के एशियन हाईवे प्रोजेक्ट का एक गुप्त मिशन है।

- **महाराष्ट्र और केरल में भी सुरंग का निर्माण-** सरकार सुरंग निर्माण में केवल हिमालय तक सीमित नहीं है। महाराष्ट्र की खमशेत-कासरघाट सुरंग का अपना महत्व है। महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट में ट्रैफिक को सुचारू करने के लिए भी बड़ी योजना पर काम चल रहा है। मुंबई-पुणे और मुंबई-गोवा रूट पर घाट वाले रास्तों को खत्म कर सफर को तेज व सुगम बनाया जाएगा। दक्षिण भारत में नीलगिरी सब-वे सुरंग परियोजना वहां के लिए वरदान साबित होगी। केरल के वायनाड और मलप्पुरम के बीच कनेक्टिविटी के लिए पर्यावरण के अनुकूल सुरंग की योजना है। इसे इको-सेंसिटिव सुरंग के रूप में डिजाइन किया जा रहा है ताकि हाथियों के गलियारों को कोई नुकसान न पहुंचे। जम्मू-कश्मीर में अनंतनाग को किश्तवाड़ से जोड़ने के लिए ट्विन सुरंग सिंथन टॉप की डीपीआर अंतिम चरण में है। लगभग 10-12 किलोमीटर लंबी यह सुरंग सर्दियों में भारी बर्फबारी में भी जम्मू और कश्मीर घाटी के बीच एक वैकल्पिक और सुरक्षित संपर्क प्रदान करेगी। इस सुरंग का भू-तकनीकी सर्वे अंतिम चरण में है। मालूम हो कि सर्दियों में सिंथन टॉप दर्रा बंद हो जाता है।

होली पर मप्र में मावठा गिरेगा !

नए सिस्टम का दिखेगा असर, चक्रवात-ट्रफ की वजह से बादल छाए

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में होली के दिनों में मावठा गिरने यानी, आंधी-बारिश का अनुमान है। मौसम विभाग की माने तो 2 मार्च से हिमालयी क्षेत्र में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो रहा है। यह एमपी में भी असर दिखा सकता है और ग्वालियर-चंबल हिस्से में मौसम बदला रहेगा। मौसम केंद्र भोपाल के अनुसार, वर्तमान में पश्चिमी हिस्से में दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम (चक्रवात) एक्टिव है। वहीं, एक ट्रफ की एक्टिविटी भी प्रदेश में देखने को मिल रही है। इस वजह से शुक्रवार को भोपाल समेत कई जिलों में बादल छाए रहे। हालांकि, इससे पारे में कोई फर्क नहीं पड़ा।

34डिग्री पार रहा तापमान, खरगोन सबसे गर्म- आंधी-बारिश और ओले का दौर थमने के बाद प्रदेश में अप्रैल जैसी गर्मी पड़ रही है। गुरुवार के बाद शुक्रवार को भी कई शहरों में दिन का तापमान 34 डिग्री के पार रहा। वहीं, रात में यह 18 डिग्री से ज्यादा पहुंच गया है। शुक्रवार को प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में ही पारा 27.6 डिग्री दर्ज किया गया। बाकी शहरों में तापमान 30 डिग्री या इससे अधिक ही रहे। सबसे गर्म खरगोन में तापमान 34.8 डिग्री पहुंच गया। वहीं, 5 बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 32.4 डिग्री, इंदौर में 31.2 डिग्री, ग्वालियर में 32.7 डिग्री, उज्जैन-जबलपुर में 33 डिग्री रहा। रात के तापमान की बात करें तो पचमढ़ी सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 9.6 डिग्री दर्ज किया गया। सागर में सबसे ज्यादा 18.4 डिग्री और नर्मदापुरम में 18.2 डिग्री रहा। श्योपुर, सिवनी, गुना, खंडवा-टीकमगढ़ में 16 डिग्री और रतलाम-धार में 17 डिग्री या इससे ज्यादा पहुंच गया।

एम्स से निकाले गए कर्मचारी ने सुसाइड किया

भाई का आरोप- सुपरवाइजर प्रताड़ित करता था, काम में कमी बताकर निकलवा दिया था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हनुमानगंज इलाके में रहने वाले एक युवक ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। वह एम्स अस्पताल में बतौर सफाईकर्मी (आउटसोर्स) जॉब करता था। दो महीने पहले उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। परिजनों का आरोप है कि व्यक्तिगत कारणों के चलते उसका एक सुपरवाइजर उसके रंजिश रखता था। नौकरी जाने के बाद वह डिप्रेशन में रहने लगा था। फूटा मकबरा निवासी जितेंद्र कीर पिता रमेश कीर (36) शुक्रवार रात को शराब पीने के बाद घर लौटा था। देर रात अपने कमरे में सोने चला गया। तड़के परिजनों ने उसके शव को फांसी के फंदे पर लटका देखा। उसने पत्नी की साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाई थी। तत्काल मामले की सूचना पुलिस को दी। शनिवार दोपहर को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस को कमरे की तलाशी में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है।

भाई बोला- सुपरवाइजर ने प्रताड़ित किया

मृतक के भाई आशीष ने आरोप लगाया है कि भैया को सुपरवाइजर प्रताड़ित करता था। काम में कमियां निकालकर उन्हें बदनाम किया, साजिश के तहत उन्हें नौकरी से निकलवा दिया। इससे तनाव में आकर भैया शराब अधिक पीने लगे थे। नशे में उनका भाभी से भी विवाद होने लगा था। नाराज भाभी ने चार दिन पहले घर छोड़ दिया था। वे बच्चों को लेकर मायके चली गई। भैया का शव भाभी की साड़ी से बने फंदे पर लटका मिला। वहीं, पुलिस का कहना है कि मामले की सभी एंगल पर जांच की जा रही है।

फाग उत्सव की शुरुआत

मंदिरों में भक्तों ने भगवान के साथ गुलाल-फूलों से खेली होली, दूसरे शहरों से भी पहुंचे लोग

उज्जैन (नप्र)। होलिका दहन से पहले ही धर्मनगरी उज्जैन रंगों में सराबोर नजर आ रही है। शहर के प्रमुख मंदिरों में फाग उत्सव शुरू हो चुका है और गुलाल और फूलों से जमकर होली खेली जा रही है। वैष्णव संप्रदाय के मंदिरों के साथ ही नई पेठ स्थित गजलक्ष्मी मंदिर, छत्री चौक स्थित गोपाल मंदिर और खाटू श्याम जी मंदिर में शनिवार को भक्त रंगों में सराबोर नजर आए।

फाग उत्सव के तहत मंदिरों में भव्य आयोजन किए गए, जहां भक्ति, संगीत और रंगों का अद्भुत संगम देखने को मिला। भजन-कीर्तन के बीच श्रद्धालुओं ने भगवान के चरणों में आस्था अर्पित की और जमकर गुलाल उड़ाया। फूलों की होली ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। श्रद्धालुओं ने ठाकुरजी के साथ होली खेलकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

दूसरे शहरों से भी पहुंचे भक्त

ठाकुर की हवेली सहित कई वैष्णव मंदिरों में गुलाल और फूलों से होली खेली जा रही है। इस उत्सव में उज्जैन के अलावा देवास, इंदौर, रतलाम सहित अन्य शहरों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। पुजारी अनिमेश शर्मा ने बताया कि हर वर्ष बसंत पंचमी के बाद फाल्गुन मास की शुरुआत होती है, जो भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित माना जाता है। फाल्गुन माह में होली का पर्व विशेष उल्लास के साथ मनाया जाता है। मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने राधाजी और गोपियों के साथ होली खेलकर रासलीला की थी, तभी से फाग महोत्सव की परंपरा चली आ रही है।

कृषि को पारंपरिक उत्पादन से आगे बढ़ाकर बनाया जायेगा लाभकारी व्यवसाय : मुख्यमंत्री

कृषक कल्याण वर्ष-2026- म.प्र.को देश के कृषि पॉवर-हाउस के रूप में किया स्थापित

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश ने पिछले दशक में कृषि क्षेत्र में 16 प्रतिशत से अधिक की वार्षिक विकास दर हासिल कर स्वयं को देश के 'कृषि पॉवर-हाउस' के रूप में स्थापित किया है। फसल उत्पादन, उत्पादकता, दुग्ध और मत्स्य पालन में हुई। इस अभूतपूर्व प्रगति के बाद अब राज्य सरकार का मुख्य उद्देश्य कृषि को पारंपरिक उत्पादन से आगे बढ़ाकर एक 'लाभकारी व्यवसाय' के रूप में परिवर्तित करना है। इस संकल्प के केंद्र में कृषि के उत्पादन और उत्पादकता को तकनीक के माध्यम से बढ़ाते हुए, मार्केटिंग और प्रोसेसिंग से जोड़ना है। समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश के लिए वर्ष-2026 कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। कृषि और किसानों पर केन्द्रित पूरे वर्ष संचालित होने वाली गतिविधियों से किसानों की आय में स्थायी वृद्धि सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त किया जायेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में कृषि को 'लाभकारी व्यवसाय' बनाने के इस संकल्प को धरातल पर उतारने के लिए सरकार कृषि अनुसंधान और मौसम आधारित जोखिम प्रबंधन को एक नई दिशा देने जा रही है। इस संकल्प के अंतर्गत राज्य की विशिष्ट फसलों की उत्पादकता में वृद्धि करते हुए उन्हें वैश्विक स्तर पर

पहचान दिलाने के लिए महत्वपूर्ण अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की जा रही है, इसी क्रम में डिंडौरी में स्थापित होने जा रहे 'मध्यप्रदेश राज्य श्रीअन्न अनुसंधान केंद्र' के माध्यम से मिलेट्स के उत्पादन एवं पोषण सुरक्षा को नई ऊंचाइयों पर ले जाया जाएगा। इसी कड़ी में, ग्वालियर में सरसों अनुसंधान केंद्र और उज्जैन में चना अनुसंधान केंद्र की स्थापना कर इन प्रमुख फसलों की गुणवत्ता और पैदावार को बढ़ाने पर विशेष बल दिया जायेगा।

विदेश अध्ययन भ्रमण योजना- कृषि क्षेत्र में वैश्विक नवाचारों को आत्मसात करने के लिए किसानों और अधिकारियों के लिए 'विदेश अध्ययन भ्रमण योजना' को पुनः प्रारंभ किया जा रहा है, जिससे विश्व की उन्नत तकनीकों को स्थानीय स्तर पर लागू किया जा सके। इसके साथ ही, फसल विविधीकरण को बढ़ावा देते हुए ग्रीष्मकालीन मूंगफली की खेती के लिए एक प्रभावी कार्ययोजना तैयार की जा रही है, जो किसानों के लिए आय का एक अतिरिक्त और मजबूत स्रोत बनेगी। खेती की मौसम पर निर्भरता और उससे जुड़ी अनिश्चितताओं को कम करने के लिए सरकार तकनीक-आधारित जोखिम प्रबंधन पर विशेष निवेश कर रही है।

किसानों को दिया जायेगा पूर्ण सुरक्षा कवच- किसानों को पूर्ण सुरक्षा कवच प्रदान करने के उद्देश्य से अब मौसम आधारित बीमा योजना का दायरा बढ़ाकर उसमें उद्यानिकी फसलों को भी शामिल किया जा रहा है। अनुसंधान, विविधीकरण और डिजिटल वेदर मैनेजमेंट का यह एकीकृत संगम न केवल कृषि को जोखिम मुक्त बनाएगा, बल्कि समृद्ध किसान, समृद्ध प्रदेश के संकल्प को वास्तविकता में बदलकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता के नए सोपान पर खड़ा करेगा।

10-दिशात्मक रणनीति

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषक कल्याण वर्ष 2026 को प्रभावी बनाने के लिए सरकार ने व्यापक 10-दिशात्मक रणनीति तैयार की है। इसके प्रथम आयाम के तहत श्री-अन्न (मिलेट्स), चना और सरसों जैसी फसलों पर गहन शोध और उर्वरकों के अग्रिम भंडारण पर जोर दिया गया है। साथ ही तिलहन भावान्तर व्यापीकरण, उड़द/मूंगफली, गन्ना क्षेत्र विस्तारण, ई-विकास व्यापीकरण, उर्वरक अग्रिम भंडारण, पराली से उर्जा प्रबंधन इत्यादि कार्य सम्मिलित हैं। द्वितीय आयाम फसल विविधीकरण और प्राइस स्टेबिलाइज़ेशन (मूल्य स्थिरीकरण) पर केंद्रित है, जिससे आलू-प्याज-टमाटर जैसी फसलों के दाम गिरने पर भी किसान आर्थिक रूप से सुरक्षित रहें। तृतीय आयाम पूरी तरह से प्राकृतिक मध्यप्रदेश मिशन को समर्पित है, जहाँ रसायन मुक्त खेती को प्रोत्साहित किया जाएगा। चतुर्थ और पंचम आयाम में संसाधनों के इष्टतम उपयोग, जैसे पर ड्रॉप मोर क्रॉप 2.0 और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन को शामिल किया गया है। कृषि अपशिष्ट से ऊर्जा बनाने के लिए 10 कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट की स्थापना इस अभियान का एक मुख्य आकर्षण है। छठे से आठवें आयाम तक का ध्यान कृषि मंडियों के आधुनिकीकरण, एमपी ग्लोबल एग्री ब्रांडिंग' और 'एग्री-हैकाथॉन' जैसे नवाचारों पर है। अंतिम दो आयाम डिजिटल गवर्नेंस और पारदर्शिता सुनिश्चित करते हैं, जिसमें एआई -आधारित कृषि परामर्श और क्यूआर कोड आधारित फार्म ट्रेसेबिलिटी शामिल है।

संस्थागत सुधार और शैक्षिक पहल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि वर्ष 2026 केवल कार्यक्रमों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक मजबूत ढांचा तैयार करने की पहल है। अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना एवं कृषकों का क्षमता संवर्धन इस वर्ष का महत्वपूर्ण घटक होगा। इसी अनुक्रम में सरकार द्वारा कृषि विभाग और मंडी बोर्ड में रिक्त पदों की सीधी भर्ती भी की जाएगी।

मां-बहन के जेवर लेकर भागे युवक की हत्या

सतना के जंगल में पत्थर से कुचलकर मार डाला; पास पड़ी थी शराब की बोतल और चिलम

सतना (नप्र)। सतना जिले के नागौद थाना क्षेत्र में शुक्रवार शाम एक युवक का शव मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। मृतक की पहचान मैहर जिले के गोरइया गांव निवासी अनिल पटेल (28) के रूप में हुई है। परिजन के अनुसार, अनिल 24 फरवरी को घर से मां और बहन के गहने और कैश लेकर चला गया था। इस मामले में अमदरा थाने में उसके खिलाफ चोरी की शिकायत दर्ज कराई गई थी। पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। शुक्रवार शाम करीब 6 बजे, डुड़हा गांव से लगभग एक किलोमीटर दूर जंगल में नहर के किनारे ग्रामीणों ने खून से लथपथ शव देखा। सूचना मिलने पर नागौद पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस को शव की जेब से आधार कार्ड मिला, जिससे मृतक की पहचान हो सकी।

पुलिस को आशंका- युवक को बहाने से बुलाकर हत्या

पुलिस के मुताबिक, अनिल पटेल के सिर को पत्थर से कुचलकर हत्या की गई है। उसके शरीर पर कई गंभीर चोटों के निशान भी मिले हैं। घटनास्थल से मृतक की बाइक, शराब की बोतल और गांजे की चिलम समेत अन्य सामग्री बरामद हुई है। पुलिस आशंका जता रही है कि आरोपियों ने अनिल को किसी बहाने से जंगल में बुलाया और शराब पिलाने के बाद इस वारदात को अंजाम दिया। देर रात तक फोरेंसिक टीम, डॉग स्क्वॉड और साइबर सेल की टीम मौके पर जांच में जुटी रही। हत्या की वजह अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है। परिजन से पूछताछ जारी है।

आरोपी पर पहले से दर्ज हैं कई आपराधिक मामले

पुलिस के मुताबिक अनिल अपनी बहन और मां के साथ रहता था। उसके पिता पहले ही गुजर चुके हैं। परिवार का कहना है कि अनिल बहन और मां के गहने और कुछ रुपए चोरी कर घर से बाहर ले गया था।

नागौद थाना प्रभारी अशोक पांडेय ने बताया कि अनिल के खिलाफ अमदरा थाने में मारपीट सहित तीन आपराधिक प्रकरण पहले से दर्ज हैं। सायबर टीम अब अनिल के मोबाइल की कॉल डिटेल्स खंगाल रही है। उसके परिवार से भी पूछताछ की जा रही है ताकि आरोपियों का कोई सुराग हाथ लग सके।

भोपाल में अज्ञात कार ने नर्सिंग छात्र को कुचला

इलाज के दौरान मौत, सड़क पार करते समय हुआ हादसा

भोपाल (नप्र)। राजधानी के बैरागढ़ इलाके में शुक्रवार देर रात हुए सड़क हादसे में 24 वर्षीय नर्सिंग छात्र की मौत हो गई। अज्ञात कार की टक्कर से गंभीर रूप से घायल युवक ने शनिवार तड़के इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

मृतक की पहचान आकाशदीप पुत्र सुनील कुमार दीप (24) के रूप में हुई है। वह एक निजी कॉलेज से बीएससी नर्सिंग की पढ़ाई कर रहा था और भैंसाखेड़ी खजूरी सड़क क्षेत्र में रहता था।

कार चालक फरार हो गया- जानकारी के अनुसार आकाशदीप शुक्रवार देर रात अपना निजी काम निपटाकर घर लौट रहा था। चंचल चौराहा पर निर्माण कार्य चल रहा है। इसी दौरान उसने एक कट पॉइंट पार किया, तभी सामने से आ रही तेज रफ्तार कार ने उसे टक्कर मार दी। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया।

सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही पुलिस- राहगीरों ने गंभीर रूप से घायल आकाशदीप को तत्काल अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान शनिवार तड़के उसकी मौत हो गई। शनिवार दोपहर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से अज्ञात कार और उसके चालक की तलाश में जुटी है।

प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा के 11,978 पदों का रिजल्ट जारी

मप्र के 11 शहरों में एक लाख से अधिक उम्मीदवारों ने दी थी परीक्षा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल ने शुक्रवार को प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा के परिणाम घोषित कर दिए हैं। प्राथमिक शिक्षक चयन परीक्षा-2025 के परिणाम 14 प्रतिशत ओबीसी पदों सहित परिणाम घोषित किए हैं। न्यूनतम वेतन 25,300 रुपए है। महंगाई भत्ता भी दिया जाएगा। कुल 13,089 पदों में से 11,978 पदों (87 प्रतिशत) के लिए नतीजे जारी किए हैं। यह परीक्षा स्कूल शिक्षा और जनजातीय कार्य विभाग के लिए 9 से 13 अक्टूबर 2025 को आयोजित हुई थी। 1,10,745 उम्मीदवारों को प्रवेश पत्र जारी किए थे, जिनमें से 1,03,494 उम्मीदवार परीक्षा में शामिल हुए। यानी 7,251 अनुपस्थित रहे थे।

भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, नीमच, रतलाम, रीवा, सागर, सतना, सीधी और उज्जैन समेत 11 शहरों में ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की गई थी। परीक्षा के बाद आदर्श उत्तर कुंजी वेबसाइट पर अपलोड कर उम्मीदवारों से आपत्तियां आमंत्रित की गई थीं। आपत्तियों के निराकरण के बाद अंतिम उत्तर कुंजी के आधार पर पर्सेंटाइल प्रणाली से परिणाम तैयार किया गया।

श्रेणी, जेंडर, जन्मतिथि के आधार पर परिणाम- मंडल ने स्पष्ट किया है कि नियमानुसार निःशक्तजन वर्ग के उम्मीदवारों को पूर्व निर्धारित प्रावधानों के अंतर्गत समायोजित किया है। परीक्षा में समान अंक प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों की आपसी वरीयता नियम पुस्तिका में तय प्रावधानों के अनुसार तय की है। ऑनलाइन आवेदन पत्र में उम्मीदवारों की श्रेणी, संवर्ग, लिंग, जन्मतिथि, मध्यप्रदेश के मूल निवासी होने और पद विकल्प, प्राथमिकता के आधार पर परिणाम तैयार किया है।

अब विभागों में होगा दस्तावेजों का सत्यापन- मंडल की प्रावीण्य सूची के आधार पर संबंधित विभाग, कार्यालय स्तर पर उम्मीदवारों के दस्तावेजों का सत्यापन किया जाएगा। सत्यापन के बाद ही अंतिम चयन एवं नियुक्ति की कार्रवाई की जाएगी।

भोपाल धर्मांतरण-रेप कांड में ड्रग्स नेटवर्क का खुलासा

पब-लाउंज तक सप्लाई, सगी बहनों पर लड़कियां फंसाकर रईसजादों तक पहुंचाने के आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल के धर्मांतरण और रेप कांड की जांच में अब ड्रग्स नेटवर्क की परतें खुलने लगी हैं। पुलिस के मुताबिक, सगी बहनों आफरीन और अमरीन पर गरीब लड़कियों को मदद और हाई-प्रोफाइल लाइफ का झांसा देकर गिरोह में शामिल करने, उन्हें रईसजादों की पार्टियों तक पहुंचाने और पब-लाउंज में कोड वर्ड के जरिए ड्रग्स सप्लाई कराने के आरोप हैं। इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जब्त कर नेटवर्क की कड़ियां जोड़ी जा रही हैं।

जांच में ये भी पता चला कि आफरीन और अमरीन चार साल पहले अब्बास नगर की झुग्गी बस्ती छोड़ चुकी थीं। इसके बाद भी स्थानीय रहवासी उनकी करतूतों से परेशान थे। अब्बास नगर में रहने वाले पड़ोसी ताज मोहम्मद ने बताया कि दोनों बहनें

देर रात युवक और युवतियों को लेकर आती थीं। यहां पार्टी के नाम पर हुड़दंग करती थीं। मोहल्ले वाले विरोध करते तो रेप के झूठे केस में जेल भिजवाने की धमकी देती थीं। ताज का कहना है कि 2006 में दोनों बहनें पिता और मां के साथ मोहल्ले में रहने आई थीं। पिता की मौत के बाद उनके घर बड़ी संख्या में अनजान युवक और युवतियां आने लगे। चार साल पहले दोनों बहनें फतेहगढ़ में रहने चली गईं। कुछ समय बाद भाई बिलाल भी चला गया और मां ने दूसरा निकाह कर लिया।

पब और लाउंज में लड़कियों से कराती थीं ड्रग डिलीवरी- आफरीन और अमरीन के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने वाली दोनों युवतियां शुक्रवार शाम को पुलिस कंट्रोल रूम पहुंचीं। उन्होंने बताया कि दोनों बहनें ड्रग तस्करी का काम करती हैं। चंदन सहित कई अन्य लोग उनके इस धंधे में शामिल हैं।

ड्रग की डिलीवरी भी लड़कियों से कराई जाती है। ग्राहकों को खास कोड वर्ड देकर डिलीवरी दी जाती थी। शहर के नामचीन पब और लाउंज में ड्रग को शर्ट कहा जाता था, वहीं पीड़िताओं के इस खुलासे के बाद पुलिस ने एमडी ड्रग तस्करी के नेटवर्क को खंगालना शुरू कर दिया है। पुलिस अमरीन और चंदन से ड्रग तस्करी के संबंध में भी पूछताछ करेगी।

फ्लैट की सर्चिंग में इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस मिले- बागसेवनिया पुलिस ने अमरीन के फ्लैट से इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जब्त किए हैं। इसमें दो मोबाइल फोन हैं। इसके साथ अहमदाबाद में भी पुलिस ने उस स्पॉट का वेरिफिकेशन किया, जहां दोनों पीड़िता का रेप कराया गया। बागसेवनिया पुलिस यासिर की तलाश में अहमदाबाद में दबिश दे रही है। पुलिस रिमांड पर चल रहे आरोपी चंदन और अमरीन पुलिस टीम के साथ ही हैं।

'सुबह सवेरे' समाचार-पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण

घोषणा

फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	:	भोपाल
2. प्रकाशन अवधि	:	दैनिक
3. मुद्रक का नाम	:	उमेश त्रिवेदी
क्या भारत का नागरिक है	:	हां
पता	:	डी-100/46, शिवाजी नगर, भोपाल
4. प्रकाशक का नाम	:	उमेश त्रिवेदी
क्या भारत का नागरिक है	:	हां
पता	:	डी-100/46, शिवाजी नगर, भोपाल
4. संपादक का नाम	:	उमेश त्रिवेदी
क्या भारत का नागरिक है	:	हां
पता	:	डी-100/46, शिवाजी नगर, भोपाल
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	सुबह सवेरे मीडिया एलएलपी बी-208, शाहपुरा, भोपाल-(म.प्र.)-462016

मैं उमेश त्रिवेदी एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

उमेश त्रिवेदी

दिनांक : 28-02-2026 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

पुस्तक समीक्षा

सतीश व्यास 'आस'
समीक्षक

नारी मन एवं ग्राम्यजीवन से ओतप्रात

केदार शर्मा भी ऐसे संवेदनशील कथाकार है जो अपने साथ कई व्यक्तियों को अपने भीतर समाये चलते हैं। वे उस भाषा को बड़ी आसानी से सुन पढ़ लेते हैं जिसमें बहुधा ध्वनियाँ और अल्फाज नहीं होते। इसकी ताकीदगी करती है इस पुस्तक की पहली और प्रतिनिधि कहानी; 'वह अधूरी कहानी'। जीवन की कहानी जहाँ विराम लेती है रचनाकार के हृदय में वहीं से कहानी गर्भती है। तभी इस कहानी में दीनानाथ अपनी की विद्यार्थी रही किरण के हाथ में अपने बेटे अखिलेश का हाथ सहर्ष सौंप देते हैं।

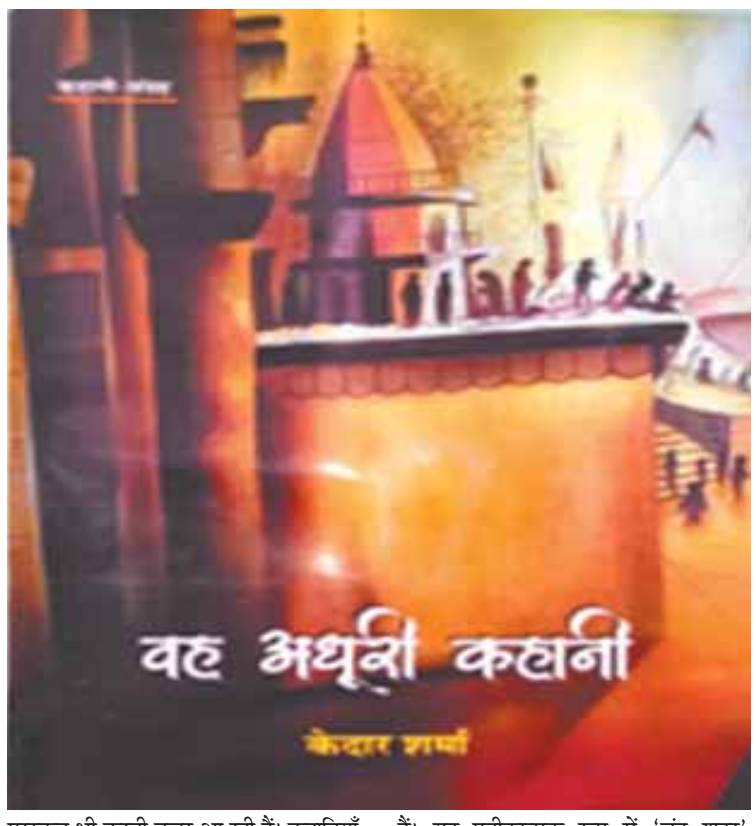

सं | हम जिस समाज में रहते हैं उसमें रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन का अपना ही अर्थ है। हर इंसान की जीवन की इबारत अपने अपने प्लॉट पर मँडी है। किसी ने दुख को ही नियती मान लिया है तो किसी को मिले सुख में भी वो खुशी ताउम्र नहीं मिलती। एक संवेदनशील रचनाकार अपने आस-पास बिखरी ऐसी कहानियों को सहजता से महसूस कर लेता है। उसे नियती और प्रकृति की भाषा को पढ़ना आता है इस कारण साधारण मानव के विपरीत एक कलमकार उस भाषा से तादात्म्य कर लेता है।

केदार शर्मा भी ऐसे संवेदनशील कथाकार है जो अपने साथ कई व्यक्तियों को अपने भीतर समाये चलते हैं। वे उस भाषा को बड़ी आसानी से सुन पढ़ लेते हैं जिसमें बहुधा ध्वनियाँ और अल्फाज नहीं होते। इसकी ताकीदगी करती है इस पुस्तक की पहली और प्रतिनिधि कहानी; 'वह अधूरी कहानी'। जीवन की कहानी जहाँ विराम लेती है रचनाकार के हृदय में वहीं से कहानी गर्भती है। तभी इस कहानी में दीनानाथ अपनी की विद्यार्थी रही किरण के हाथ में अपने बेटे अखिलेश का हाथ सहर्ष सौंप देते हैं।

संग्रह में तेरह कहानियां हैं जिसमें अधिकतर कहानियाँ स्त्रीविमर्श को लेकर है। कथाकार की कहानियों के पात्रों में केन्द्रीय पात्र अधिकांशतः वे स्त्रियाँ हैं जो सदियों से पुरुषवादी सोच से दबी कुचली हैं मगर अब वे अपने हाथ में लोहे ही मजबूत मशाल लेकर अपने बूते पर आगे बढ़ने को बेताब हैं। एक नारी ही है जो इस समाज की मुख्य धुरी है मगर उसके उत्सर्ग को अभी तक वो मुकाम नहीं मिला है जिसकी वे असल में अधिकारी है। कथाकार केदार शर्मा स्त्रियों को उनके अधिकार दिलाने को अपनी कलम को माध्यम बना रहे हैं।

संग्रह की कहानियाँ समाज में व्याप्त खोखलेपन, संत्रास, पीड़ा, संघर्ष और कूप-मंडूपता को सामने रखती हैं वहीं स्वावलंबन, ईमानदारी और परिवर्तन की कामना को पुरस्कृत भी करती नजर आ रही हैं। कहानियाँ झिझक और संकोच की लक्ष्मणरेखा को चीरकर स्पष्टवादिता को प्रोत्साहित कर रही हैं। यह प्रतीकात्मक रूप में 'बंद शटर' कहानी के जरिए एक नारी के मन के भाव को खुलकर अभिव्यक्ति को बल देती है।

कथाकार की कलम में शब्दचित्र की जादूगरी है। इसी तासीर की दो कहानियाँ 'चौकीदारिन माई' और 'विदुरा साहू की याद' हैं जो रेखाचित्रात्मक संस्मरण हैं।

नारी विमर्श की कहानियों में हम 'ममता', 'स्वावलंबन', 'बसंत और कोयल', 'वापस गाँव की ओर' एवं 'समय के साक्षी' को रख सकते हैं।

कहानी 'एक मुट्ठी सुख में' भावों की अतल गहराई है। यह एक दर्द भरी हूक से साथ उत्कर्ष पर पहुंचती है जहाँ बस पश्चाताप शेष है। एक पुरुष मनोविज्ञान को दर्शाती कहानी 'अतीत की छाया' खासा प्रभाव छोड़ती है। यह सनकी मानसिकता का मनोवैज्ञानिक उपाय रखकर कहानी को सुखान्त की ओर मोड़ देती हुई रचना है।

कथाकार का मन ग्रामीण परिवेश से ओतप्रोत है। इस कारण कहानियों में सरलता, स्पष्टता और पारदर्शिता की झलक संवादों में नजर आती हैं। अधिकांश कहानियाँ ग्राम्य संस्कृति को पोषित और पल्लवित करती हैं।

एक गाँव गलती से भी शहर की ओर मजबूरी में चला जाये मगर वह फिर से गाँव होना चाहता है। गाँव लौटना चाहता है। शहर में कसमसाते गाँव अवसर ढूंढ़ते हैं फिर से गाँव के लिए। इस दृष्टि से 'वापस गाँव की ओर' कहानी एक सशक्त कहानी है।

'जो बोओगे वो ही काटोगे' उक्ति को चरितार्थ करती कहानी 'कर्मफल' अपने उद्देश्य में सफल रही है। संग्रह की अंतिम कहानी 'साझी दीवार' जब से जगे तभी सवेरा को चरितार्थ करती है। किसी समस्या का समाधान इंसान के हाथ में है कि इसका समाधान निकालें या इसे समस्या के रूप में अवलंबित रखा जाए ।

कहानियाँ के विषय यद्यपि नये नहीं है मगर कथा का प्रवाह और समुचित संवाद अदायगी कहानी को पूर्णता की ओर ले जाते हैं। कथाकार ने समाज की उन स्थितियों को कहानियों में शामिल किया है जो समाज में समाधान के लिए रास्ता ढूँढ़ रही हैं। अधिकतर कहानियाँ लेखक के आसपास ही घटित हुई है। ये कहानियाँ निम्न मध्यमवर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पुस्तक में कहीं-कहीं वर्तनी की त्रुटि सुधि पाठकों को अखरती है। एक दो कहानियों में पात्रों को अनुकूलता न होने पर भी शामिल कर लिया गया है।

फिर भी राजस्थानी साहित्य अकादमी द्वारा चयनित 'वह अधूरी कहानी' पाठकों को चिन्तन के लिए झंझोकरती है।

इस प्रथम कृति के लिए केदार शर्मा को हार्दिक बधाई।

पुस्तक: वह अधूरी कहानी
लेखक: केदार शर्मा
मूल्य: 199 रुपये
प्रकाशक: बोधि प्रकाशन, मानसरोवर, जयपुर

कविता

माँ की पहली चीलगाड़ी यात्रा

डॉ. जीवन एस. रजक

जब मैं बच्चा था
खपरैल के घरौंदे में
मिट्टी की दीवारों में
सपनों की दीवारें
रोशनी से भरी होती थीं

रात के अंधेरे में
टिमटिमाते हुए गुजरते
हवाईजहाज को देखकर
आँगन में खड़ी माँ
आँखे फैलाकर अक्सर कहती-
मुझे भी चीलगाड़ी में बैठना है
उसकी ये साधारण सी इच्छा
दरअसल
पूरे जीवन की थकान का विराम थी

उस समय

माँ के सपनों की ऊँचाई
समझ नहीं आती थी
लेकिन माँ ने
चूल्हे की तपिस में जलकर
खेत- खलिहान में झुलसकर
अपने हिस्से की धूप
मेरे हिस्से की छाया में बदल दी

आज जब माँ
पहली बार चीलगाड़ी में बैठी
तो उसकी आँखो में
वही टिमटिमाती रोशनी थी
जिसे उसने कभी आकाश में देखा था

बादलों के बीच
विमान की खिड़की से बाहर देखकर
माँ मन में सोचती होगी-
सपने इतने भी दूर नहीं होते
माँ मुस्कुरा रही थी
जैसे कह रही हो
ये सारा आकाश मेरे बेटे का है

चीलगाड़ी की यात्रा
माँ के उस विश्वास की यात्रा है
जो हमारी देह में
प्रतिपल स्पंदित होता है
इसीलिए माँ होना
धरती की सबसे बड़ी साधना है
और माँ के सपनों को पूरा करना
दुनियाँ का सबसे बड़ा धर्म।

लघुकथा

हड़ा-हड़ा

सुरेश सौरभ

ईश्वर के घर में ,जाने कहां से घूमता-घामता एक कुत्ता घुस गया, लोगों ने भगाया...धत् धत् धत।

ईश्वर के घर में एक रोज कुछ बंदर घुस गए, उत्पात करने लगे, लोगों ने गुलेलों से डंडों से भगाया। बंदर खों-खों-खों करते हुए भागे।

ईश्वर की गुंबद मीनार पर तमाम कौवे एक दिन कांव-कांव करने लगे, खूब शोर करने लगे, तब लोगों ने ढेलों से ,कंकरों से हड़ा-हड़ा करके भगाया ताकि ईश्वर का घर पाक-साफ रहे।

कुछ दिन बाद, ईश्वर के घर के बाहर बहुत भीड़ लगी थी। अंदर पुलिस ने खून से लथपथ रोती-चीखती एक बच्ची बरामद की, उसके साथ दुराचार करने वाला आरोपी फरार हो चुका था। बाहर लोग चख-चख कर रहे थे।

अगले दिन ईश्वर का घर साफ-सुथरा हुआ और लोगों ने इबादत शुरू कर दी।

राजकुमार कुम्भज की तीन कविता? (जवाहर चौधरी के लिए)

1.बदलता सच

थोड़ा प्यार भेजना मुझे
डटकर भेजना थोड़ा धिक्कार भी
जो कुछ भी महका इस जीवन में
जैसा भी महका,मुक्त ही उन्मुक्त ही महका
पत्थर भी दे ही देता है जगह फूलों को
झुलस गई चीज़ों पर भी बरसती है ओस
मेरे-तेरे जैसा रखा नहीं कुछ भेद मैंने
पारदर्शी रहा सबसे सब का सब
दृश्य के अदृश्य में करने को अक़्सर ही
था,बहुत कुछ था हद-बेहद जैसा
वर्जित और प्रतिबंधित प्रकारांतर से
एक तरफ़ डकारें थीं बेहद कायरतापूर्ण
दूसरी तरफ़ थीं पुकारती पुकारें अनगिनत
निर्बल-निर्मल-निच्छल पानी-पानी
जो कुछ थोड़ा बहुत करना था इस बीच
ज़ाहिर है कि कर नहीं सका संभव
उससे कुछ थोड़ा बहुत मरना था
ज़ाहिर है कि मर नहीं सका थोड़ा भी
और अब आख़िरी घंटी के धूमिल गूँजन में
समझ नहीं पा रहा हूँ इतना तक भी
कि किसे भेजूँ,कैसे भेजूँ लानत किस ओर
जीवन का होता नहीं है संस्करण दूसरा
हर आँख का हर आँसू पहला और अंतिम
सोचता हूँ और गिनता रहता हूँ बार-बार
उत्तर-दक्षिण सब हुआ जाता है अर्थहीन
अपनी ही दुर्बलता? घेरती हैं फिर-फिर
शायद इसी जीवन,इसी कविता का
नये सिरे से बदल रहा है सच.

2.क्या छुपाते हैं वे?

ये मत बताओ मुझे
कि अंततः क्या बताते लजाते हैं वे
चोर-बाज़ार में बेचते हुए अपना ईमान
अगर बताना ही चाहते हो ज़रा कुछ ज़रूरी
तो सिर्फ़ इतना,इतना भर बता दो भाई
खुशबू थे,फूल थे,फल थे वे जो भी
टूट गये,टूटते गये,बिखर गये सभी के सभी
कला नहीं, कलाकार नहीं फ़सल देखना
बिना किसी की भी कोई भी क़सम खाये
आत्ममुग्ध आत्मालाप से कुछ बचते-रचते
और सही सलामत आत्म-संग्राम सहित
कि मुझ से,तुम से अपने तुच्छ इरादों में
सचमुच क्या छुपाते हैं वे?

3.ज़रुरी-ज़रुरतों मुताबिक़.

भारत की लंपट राजनीति ने
जैसा कुछ लुंज-पुंज नागरिक बनाया मुझे
उसमें तो है नहीं ज़रा भी ताप और अकड़
मुझे चाहिए साहसभरा एकदम नया जॅगल
जिसमें रहते हों शेर भी,चीते भी ढ़ेर सारे
मुझे नहीं चाहिए रीढ़हीन शाख़ जामुन की
मुझे चाहिए एक ऐसा नया नागरिक
जिसमें लोहा लेने का लोहा हो ज़रा थोड़ा
जो खड़ा हो सके ख़िलाफ़-हवा हर कहीं
और अपनों सहित कम से कम ख़ुद से भी
वक़्त-बेवक़्त की ज़रुरी-ज़रुरतों मुताबिक़
हो सके पुख़्ता मुक़ाबिल.

व्यंग्य

भावेश कानूनगो
लेखक व्यंग्यकार हैं।

सेल्फी विद संस्कार

संस्कारी व्यक्ति अमूमन आपको हर जगह मिल जाते हैं। इनमें भी दो प्रकार के संस्कारी लोग पाए जाते हैं–एक वे, जो वास्तव में विशुद्ध संस्कारी होते हैं; अर्थात् जो संस्कारी होने का दिखावा नहीं करते। दूसरे वे, जो स्वयं को अत्यधिक संस्कारवान मानते हैं और हर जगह संस्कार का प्रदर्शन करने से नहीं चूकते।

मेरे पड़ोस में रहने वाली राधा काकी न तो मंदिर जाती हैं, न कहीं विशेष पूजा-पाठ करती हैं, परंतु उनके घर से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता। इसके विपरीत, पड़ोस में रहने वाले सत्तू दादा दूसरे प्रकार के संस्कारी हैं। वे लगातार अपने संस्कारी होने का प्रदर्शन करते रहते हैं। जब भी वे घर में आते हैं, तो सबसे पहले मेरी माताजी के चरण स्पर्श करते हैं और तब तक पैर नहीं छोड़ते, जब तक उन्हें आशीर्वाद न मिल जाए। माना कि ÷माँ के चरणों में स्वर्ग होता है÷, पर सत्तू दादा ने इस वाक्य को ज़रूरत से ज़्यादा गंभीरता से ले लिया है।

जब भी कहीं इनके साथ जाओ, तो मंदिर देखते ही साक्षात् दंडवत लगाए बिना आगे नहीं बढ़ते। उस समय यदि भूलवश कोई उनके और भगवान के बीच आ जाए, तो उसे इस तरह घूरकर देखते हैं, जैसे उसने भगवान से उनकी निजी बातचीत में विघ्न डाल दिया हो। भगवान पर छप्पन भोग चढ़ाते हैं, परंतु मंदिर के बाहर बैठे गरीब फूलवाले से दो रुपये के लिए झगड़ने से नहीं चूकते। भिखारी को जब कभी दान देते हैं, तो शान से एक रुपया देकर स्वयं को राजा हरिश्चंद्र की परंपरा का वंशज बताते हुए गर्व से फूल जाते हैं।

एक दिन दोपहर में वे मेरे पास आ गए। मैंने सहज आदर-सत्कार के भाव से उन्हें बैठने के लिए कहा। सत्तू दादा बड़े तेज़ स्वर में बोले– लोगों में आजकल संस्कार ही नहीं बचे हैं! मैं घबरा गया– कहीं मेरे संस्कार-रूपी 'रिचार्ज' में कोई कमी तो नहीं हो गई! मैंने तुरंत घर में आवाज़ लगाई– सत्तू दादा आए हैं, इनके लिए पानी और चाय का इंतज़ाम किया जाए। अब उनके चेहरे पर ऐसी चमक थी, जैसे उन्हें किसी खोए हुए मुकदमे में विजय मिल गई हो।

फिर गंभीर स्वर में बोले– पड़ोस वाले रमेश भाई के बेटे को उन्होंने संस्कार ही नहीं सिखाए हैं। कल ही चौराहे पर खड़ा था। मैं निकला, पर उसने मुझे नमस्कार तक नहीं किया। मैंने उन्हें समझाया–कुछ नहीं दादा, वह किसी काम में व्यस्त होगा। लेकिन मेरे इस स्पष्टीकरण ने मानो मुझे ही दोषी ठहरा दिया। उन्हें लगा कि मैं उनकी बात काटकर उस 'संस्कारहीन' बालक के पक्ष में वकालत कर रहा हूँ। उन्होंने कहा–भाई, उसने मुझे देखकर अनदेखा किया!

अब मैं कैसे समझाता कि आपको देखकर कौन शामत बुलाता है! फिर सत्तू दादा बोले–उसकी बहन भी ऐसी ही है, छोटे-छोटे कपड़े पहनकर बाहर घूमती है! मैंने कहा–दादा, आजकल का फैशन है। उन्होंने मुझे घूरते हुए कहा–मुझे नहीं मालूम क्या? फैशन-वेशन क्या होता है! हमारे ज़माने में तो पंद्रह साल की लड़कियाँ साड़ी पहनकर निकला करती थीं। हालाँकि सत्तू दादा की लड़की भी लगभग वैसे ही कपड़े पहनती है जैसे रमेश भाई की लड़की, परंतु उसके विषय में वे कभी कुछ नहीं कहते।

सत्तू दादा साफ-सफाई का अभियान चलाते हैं और कहते हैं–मोदी जी के सपनों का भारत बनाने की कोशिश कर रहा हूँ। फोटो खिंचवाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट भी करते हैं, परंतु दूसरे ही दिन अपने घर का कचरा पड़ोसी के यहाँ फेंक देते हैं। कभी टोको तो कहते हैं–ये असंस्कारी लोग हैं, इन्हें क्या फर्क पड़ेगा! सोशल मीडिया पर वे प्रतिदिन वार के हिसाब से पोस्ट डालते हैं। यदि उनकी पोस्ट का उत्तर न दो, तो खिन्न होकर सामने वाले को 'असंस्कारी' घोषित करने में भी देर नहीं लगाते।

त्योहारों के अवसर पर तो मानो उनके भीतर का दानवीर कर्ण जागृत हो जाता है। उनके पास आने वाले सभी संदेशों को इधर-उधर अग्रेषित करने में उन्हें तनिक भी देर नहीं लगती। चोरी के संदेशों को आगे बढ़ाने में वे अपनी शान समझते हैं। एक दिन मुझसे कहने लगे– ÷भाई, उस राधा बाई को देखा? स्कूल के बच्चों को खाना खिला रही थी। जब भी कोई गरीब दिखता है, उसे घर से खाना लाकर खिलाती है।

मैंने कहा–यह तो बहुत अच्छा काम है, दादा!

वे झुंझलाकर बोले–जो सरकार का काम है, वह ये क्यों कर रही है? भिखारियों को खाना खिलाने से उनकी भिक्षा-वृत्ति बढ़ती है।

मैंने कहा–दादा, पुराणों में लिखा है कि भूखे को भोजन कराते समय कुछ नहीं सोचना चाहिए।

सत्तू दादा बोले–तो क्या सरकार के काम में हस्तक्षेप उचित है?

मैंने भी उनकी हाँ में हाँ मिला दी– सोचा, क्यों स्वयं को 'असंस्कारी' घोषित करवाऊँ!

अब सत्तू दादा हर रविवार को मोहल्ले के बच्चों को बुलाकर संस्कार शिविर लगाते हैं। पहले तो बच्चे सोचते थे कि मिठाई मिलेगी, पर वहाँ उन्हें घंटों भाषण सुनने पड़ते हैं–टीवी मत देखो, मोबाइल छोड़ो, बड़ों के पैर छुओ। लेकिन जैसे ही शिविर समाप्त होता है, दादा स्वयं मोबाइल निकालकर सेल्फी विद संस्कार पोस्ट करते हैं।

सत्तू दादा रोज़ नए संस्कार सिखाते हैं, पर शायद अब तक किसी ने उन्हें यह नहीं सिखाया कि संस्कार दिखाने की वस्तु नहीं, निभाने का विषय है। जब भी मैं राधा काकी को किसी भूखे को रोटी देते देखता हूँ, तो मन ही मन सोचता हूँ– संस्कार शिविरों में नहीं मिलते; वे वहाँ मिलते हैं, जहाँ मनुष्य, मनुष्य को समझता है।

सत्तू दादा जैसे लोग हर गली-मोहल्ले में मिल जाएंगे, जो संस्कारों का प्रदर्शन करते हैं, लेकिन व्यवहार में उनके पास संस्कारों का केवल सूखा आवरण रह जाता है। असली संस्कार तो राधा काकी जैसे लोगों में दिखाई देते हैं, जो बिना किसी दिखावे के दूसरों का दुःख बाँटते हैं। आज समाज को ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है, जो संस्कार को जीते हैं, न कि सोशल मीडिया पर सजाते हैं। आखिरकार, संस्कार वे नहीं जो दिखाए जाते हैं, बल्कि वे हैं जो किसी भूखे के लिए रोटी बनकर उसकी तृप्ति का कारण बनते हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक
उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

किसान और गरीबों के कलाकार फ्रांस्वा मिले

मिले का बचपन कष्टों वाला था जहाँ बचपन में ही बड़ों सा बोझा लेकर चलना होता था, खेतों में घंटों-घंटों प्रकृति के सान्निध्य में रहते हुए खटना उनकी दिनचर्या हो गई थी। मन के किसी कोने में कलाकार भी बैठा हुआ था जो रह-रह कर मिले को परेशान कर रहा था और जल्द ही उसके बचपन के चित्रों को देखकर गाँव वालों ने चंदा इकट्ठा कर उसे कला अध्ययन हेतु पेरिस भेज दिया जहाँ अध्ययन करने के साथ ही फुर्सत के समय लुब्र संग्रहालय जाकर मुख्य कलाकृतियों से अध्ययन दैनिक दिनचर्या में शामिल हो चुका था। मिले लोगों के व्यक्ति चित्र एवं धार्मिक चित्र बना कर अपने खर्च भी वहन कर रहे थे हालांकि ऐसे चित्र बनाना उन्हें पसंद नहीं था बल्कि पेरिस में रहना और वहाँ के कलाकृतियों का अध्ययन करना भी उन्हें पसंद नहीं था उन्हें तो बार्बिजाँ बुला रहा था? जहाँ जाकर ही उन्होंने अनमोल कृतियों का सृजन किया हालांकि शुरू में कई दफा कृतियाँ सैलून में अस्वीकृत हुईं।

कला, साहित्य इंसान को संवेदनशील बनाती है, सुख हो या दुख गहराई तक समझने हेतु प्रेरित करती है बीते हुए कल से ही कृतियों को कल मिलता है और हमेशा- हमेशा के लिए दर्शक उसके दर्शन से विह्वल होता रहता है। कलाकार मिले जो जमीन से जुड़ा हुआ इंसान था। परिवार में बड़ा बेटा होने की वजह से घर की सारी जिम्मेदारी से भलीभांति परिचित था, को भी जमीन की पुकार सुनाई देती थी और उसी जमीन को जमीन पर ही रह कर महसूस करना चाहते थे मिले। ग्रामीण परिवेश से लगाव का ही असर कहें या और कुछ जिसके लिए पेरिस जैसी जगह को तवज्जो ना देकर बार्बिजाँ जैसे ग्रामीण परिवेश में रहना उन्होंने स्वीकार किया। मिले किसानी के सभी गुणों से परिचित थे। निराई, गुड़ाई, जमीन की तैयारी सब कुछ उन्हें बखूबी मालूम था और आगे चलकर उनके कृतियों में भी आया।

मिले का बचपन कष्टों वाला था जहाँ बचपन में ही बड़ों सा बोझा लेकर चलना होता था, खेतों में घंटों-घंटों प्रकृति के सान्निध्य में रहते हुए खटना उनकी दिनचर्या हो गई थी। मन के किसी कोने में कलाकार भी बैठा हुआ था जो रह-रह कर मिले को परेशान कर रहा था और जल्द ही उसके बचपन के चित्रों को देखकर गाँव वालों ने चंदा इकट्ठा कर उसे कला अध्ययन हेतु पेरिस भेज दिया जहाँ अध्ययन करने के साथ ही फुर्सत के समय लुब्र संग्रहालय जाकर मुख्य कलाकृतियों से अध्ययन दैनिक दिनचर्या में शामिल हो चुका था। मिले लोगों के व्यक्ति चित्र एवं धार्मिक चित्र बना कर अपने खर्च भी वहन कर रहे थे हालांकि ऐसे चित्र बनाना उन्हें पसंद नहीं था बल्कि पेरिस में रहना और वहाँ के कलाकृतियों का अध्ययन करना भी उन्हें पसंद नहीं था उन्हें तो बार्बिजाँ बुला रहा था? जहाँ जाकर ही उन्होंने अनमोल कृतियों का सृजन किया हालांकि शुरू में कई दफा कृतियाँ सैलून में अस्वीकृत हुईं। बार्बिजाँ जहाँ कलाकारों का जमावड़ा तो बड़े ही रहस्यमई और रोचक तरीके से हुआ पर आगे चलकर उसका अपना नाम और स्थान बन सका। काल्पनिक, हसीन, मनमोहक दुनिया को देखने, आनंदित होने वाले सैलून के अधिकारियों और कला समीक्षकों को मिट्टी में सने, पसीने से तर-बतर, कष्टों में जी रहे किसानों को गैलरियों में देखना पसंद नहीं था पर मिले निराश नहीं हुए और निरंतर अपने साधना में रमे रहे। कृतियों में नए-नए तरीके से खोज करते रहे और उसी निरंतरता का प्रतिफल कहें या कुछ और पर आगे चलकर उनकी कृतियाँ वहाँ प्रदर्शित हुईं। वॉन गॉग के कृतियों की पीड़ा की शुरुआत मिले के कृतियों से ही हो गई थी।

'द ग्लीनर्स', कैनवास पर तैल, चित्र में मिले द्वारा किसानों, विशेष कर गरीब किसानों के व्यथा को दर्शाने का प्रयास हुआ है, खेतों से अनाज घर तक पहुँच जाने के बाद भी कुछ दाने जो पहले से ही खेत में झड़े रहते हैं उसे डंठल सहित बीनते हुए तीन महिलाएँ प्रदर्शित हैं बार्बिजाँ का ग्रामीण दृश्य, यथार्थ परक अंकन, किसानी परिधान बड़ा ही सुन्दर दृश्य उकेरा गया है मिले द्वारा। महिलाओं द्वारा इकट्ठे किए गए अनाज पर गौर करने वाली बात है कि यदि ये खुद के खेत में बचे हुए अनाज ढूँढ़ रही हैं तो झुके हुए बूढ़े शरीर का दर्द महसूस किया जा सकता है, अगर दूसरे के खेत में दूसरा कोई बीन रहा है तो गरीबी क्या होती है महसूस किया जा सकता है। दोपहर के समय भी इस तरह की मेहनत सदियों से चले आ रहे

दोहराव, जीवन जीने हेतु लगातार गरीब मनुष्य के दर्द को बखूबी बयाँ करता है। किसान का संघर्ष, आराम को त्याग कर अपने शरीर को कितने कष्टों के साथ लेकर आगे बढ़ता है एक किसान इस कृति में बखूबी दर्ज है। पृष्ठभूमि में कहर बरपाती धूप को भी आभास किया जा सकता है।

कृति 'आलू की फसल' में भी मौसम का वही विरोधी रूप है और जल्द जल्द फसल को घर तक पहुँचा लेने का किसान का जद्दोजहद। कार्य में तल्लीन किसानों को देखकर कलाकार के संवेदनशीलता को बखूबी समझा जा सकता है। यह कृति काफी हद तक वॉन गॉग को भी प्रभावित करती सी जान पड़ी है। कृति में काम के प्रति तल्लीनता के साथ ही कार्य को जितनी जल्दी हो सके समेट लेने का भी जज्बा दर्शित है यानी मौसम का रुख अपने आप स्पष्ट हो गया है यानी मौसम भी साफतौर से दिखाई पड़ जाती है कलाकार मिले के कृतियों में।

'कुदाली वाला आदमी' कृति में थका-हारा किसान निरंतरता न टूटे और आराम भी मिल जाए फलतः सुस्ताने हेतु कुदाल का ही सहारा लिए हाँफते हुए खड़ा है चेहरे पर का दर्द, आंखों में बेवसी, शरीर की मांसपेशियाँ, वस्त्र के बेतरतीब बिखरने का उपक्रम, पूरी कृति पर बिताए गए समय और बनाने हेतु उस दर्द के धरातल तक के सफर को दर्शाता है। पीछे दूसरे किसान द्वारा घास जलाना भी दिख रहा है, आगे काँटे वाले पौधे हैं जिसे खोदते हुए किसान को आगे बढ़ना है जीवन का गूढ़ भी यहीं है कि काँटों का पथ ही क्यूँ न हो जीने हेतु उस पर चलना ही होगा। इसी चित्र से प्रभावित हो अमेरिकन कवि एडविन मार्खम ने एक कविता लिखी जो उस समय खूब प्रभावी हुई पूरे अमेरिका भर में। 1867 के अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी में मिले के चित्रों की खूब प्रशंसा हुई जिसके परिणामस्वरूप फ्रेंच संग्राहकों द्वारा उनके चित्र रखने के प्रयत्न हुए पर तब तक पहले के कई विशेष चित्र अमेरिकन संग्राहकों के पास चले गये थे।

4 अक्टूबर 1814 को शेरबुर, फ्रांस के किसान परिवार में जन्मे कलाकार ज्या फ्रांस्वा मिले की शुरू के कृतियों को हल्के में लेने की वजह से कई प्रमुख चित्र फ्रेंच संग्रह में नहीं है। मिले शुद्ध परिवेश के साथ ही प्रमुखता से मानव आकृतियां बनाते थे जो बार्बिजाँ के बाकी कलाकारों से उनको अलग करता है। पेस्टल से बनी कृतियाँ भी ध्यान आकर्षित करती हैं। उनके प्रमुख चित्र द ऐंजेलस, द सॉवर, हार्वेस्टर रेस्टिंग, स्प्रिंग ऐट बार्बिजां आदि हैं। मिले के कृतियों में रंग मिट्टी जैसे गहरे प्रतीत होते हैं जिससे कृतियों का जुड़ाव ग्रामीण दर्शकों से और अधिक हो पाता है। मजबूत, सुडौल आकृतियों को सरलता से प्रस्तुत करने का हुनर मिले को बखूबी मालूम था जैसे। मिले अपने कृतियों के माध्यम से श्रमिक वर्ग के दर्द को दिखाते ही थे तथा लोगों को उनके दर्द से, वास्तविक दर्द से रुबरू भी करवाते थे। श्रमिक वर्ग के प्रति उनके भीतर खूब सम्मान भी था। 1875 में कलाकार मिले सदा के लिए देह त्याग चले। चित्र साभार गूगल से है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

कमजोर पटकथा से गड़बड़ा गई एक फिल्म

फिल्म - ' दो दीवाने सहर में ' आधुनिक रहन सहन की पृष्ठभूमि में फिल्माया गया एक रोमाण्टिक ड्रामा है। इसमें शशांक और रोशनी,तमाम निजी दिक्कतों के बावजूद अपना रिश्ता निभाने की कोशिश करते हैं। फिल्म में सिद्धांत चतुर्वेदी और मृणाल ठाकुर प्रमुख भूमिकाओं में हैं और दोनों ने अपने चरित्र को बखूबी निभाया है । फिल्म की पटकथा लचर है और इसकी गति इतनी धीमी है कि संवेदनशील दृष्य भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाते हैं । फिल्म के निर्देशक रवि उदयावर फिल्म को यथिर्थवादी बनाये रखने की पूरी कोशिश करते हैं मगर रेंगती पटकथा कई जगह बेहद धीमी है और कई प्रसंग का दोहराव अखरता है ।

कहानी सिद्धांत चतुर्वेदी द्वारा अभिनीत चरित्र शशांक के इर्द-गिर्द घूमती है। वह एक अण्डर कॉन्फिडेंट लड़का है जिसे 'श' और 'स' बोलने में दिक्कत होती है। इसी वजह से वह पब्लिक स्पीकिंग से दूर भागता है। उसका यह स्पीच इश्यू उसकी पर्सनैलिटी का बड़ा हिस्सा है। दूसरी तरफ मृणाल ठाकुर अभिनीत रोशनी का चरित्र है, जो अपने लुक्स को लेकर असुरक्षित रहती है। उसकी यह सोच उसकी भावनात्मक स्थिरता को प्रभावित करती है। दोनों धीरे-धीरे एक-दूसरे को समझते हैं और उनके बीच एक रिश्ता बनता है। लेकिन कहानी बहुत धीमी चलती है। कई सीन बार-बार वही बातें दोहराते हैं। भावनात्मक गहराई भी जितनी हो सकती थी, उतनी नहीं बन पाती। स्टोरी आगे बढ़ती है, पर अनुमान लगाना आसान रहता है गोया चरित्रों का ठीक से विकास भी नहीं हो पाता है ।कहानी का विषय अच्छा है। आज के 'फिल्टर वाले जमाने' में, जहां लोग अपनी कमियां छुपाते हैं, वहाँ असुरक्षा और व्यक्तिगत मुठभेड़ को सीधा दिखाना एक सही निर्णय था लेकिन इसकी प्रस्तुति उतनी मजबूत नहीं बन पाई।

फिल्म का अभिनय पक्ष बेहद मजबूत है । सिद्धांत चतुर्वेदी ने शशांक की झिझक और नर्वसनेस को बहुत नैसर्ग तरीके से दिखाया है। मृणाल ने रोशनी की असुरक्षा को शान्त और नियंत्रित अभिनय से पेश

किया है। लेकिन दोनों की केमिस्ट्री मजबूत नहीं लगती। दृश्य में परस्पर सम्बन्ध तो दिखता है पर स्पार्क या खिंचाव कम महसूस होता है जबकि रोमाण्टिक फिल्मों में यह बहुत जरुरी होता है। इनके बॉन्डिंग मोमेंट्स ठीक हैं, लेकिन भावनात्मक तीव्रता हल्की रहती है। साइड कैरेक्टर्स भी सही से डेवलप नहीं किए गए। इससे कहानी का माहौल थोड़ा खाली-सा लगता है।

निर्देशन साफ-सुथरा है लेकिन फिल्म की गति एक जैसी नहीं रहती। कई दृष्य लम्बे लगते हैं और दृश्य परिवर्तन सहज नहीं लगता है। कुछ हिस्सों में फिल्म सपाट महसूस होती है। दृश्य चयन है तो सरल मगर उनमें विविधता कम है। इसलिए फिल्म देखने में भी औसत लगती है। एडिटिंग कसा हुआ नहीं है, जिससे कहानी कई जगह खिंचने लगती है। भावनात्मक जुड़ाव भी ठीक से नहीं बनता है। क्लाइमैक्स भी उम्मीद के मुकाबले कम प्रभावी लगता है। फिल्म का विचार तत्व तो अच्छा था, पर उसका फिल्मांकन उतना प्रभावशाली नहीं बन पाया । संगीत इस फिल्म का कमजोर पक्ष है। गाने सुनते समय ठीक लगते हैं, पर याद नहीं रहते। बैकग्राउंड स्कोर भी दृष्यों को मजबूत नहीं बनाता है । रोमाण्टिक फिल्म में म्युजिक महत्वपूर्ण होता है, पर यहाँ गाने सिर्फ जगह भरते नजर आते हैं। फिल्म खत्म होने के बाद कोई धुन या लाइन मन में नहीं ठहरती।

कुल मिलाकर यह एक निराशाजनक फिल्म साबित होती है। अच्छे इरादे के बावजूद फिल्म अपने किसी भी पहलू में प्रभाव नहीं छोड़ पाती। एक्टिंग ईमानदार है, लेकिन कमजोर पटकथा, बेहद धीमी गति, चरित्रों में लगभग शून्य केमिस्ट्री और कमजोर संगीत - सब मिलकर इसे और भी फीका बना देते हैं। कहानी आगे बढ़ने के बजाय अटकती हुई लगती है,इमोशनल पल असर नहीं छोड़ते और रोमांस बनावटी सा महसूस होता है। इंटरवल तक आते-आते फिल्म भारी लगने लगती है और दूसरे हाफ में तो बिल्कुल खिंचती हुई महसूस होती है। अगर आप अच्छी, गहरी या एंगेजिंग लव स्टोरी की उम्मीद से जा रहे हैं, तो यह फिल्म आपको निश्चित रूप से निराश करेगी।

धरोहर

सुनील कुमार गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गोलघर: जहां भोपाल धड़कता है, जहां पत्थर बोलते हैं

कोई मुझसे पूछे कि तुम्हें भोपाल क्यों अच्छा लगता है, तो मैं कहूंगा कि क़ुदरत की गोद में परवरिश पाता नफ़ासत की तहज़ीब का ये शहर भोपाल अपने आग़ोश में इतिहास की अनगिनत परतें समेटे हुए है। ये ज़िंदा विरासतों का ऐसा शहर है, जहां हुकूमत, इंसानियत, फ़न और फ़लाह यानी भलाई, कामयाबी सब एक साथ नज़र आते हैं। ये शहर मुझे इसलिए पसंद है कि भोपाल की फ़िज़ाओं में बेगमों, नवाबों की नवाबी ही नहीं, बल्कि उनके इशारों पर तराशे गए पत्थरों की दास्तानें भी तैरती हैं।

मेरा मानना है कि कोई भी इमारत महज़ ईंट-पत्थरों की तामीर नहीं होती, बल्कि उसके पीछे किसी का ख़्वाब होता है। अगर वो ख़्वाब, जो एक इमारत और उसके दायरे में रहने वाले इंसान, परिंदों, हुनर को साथ चलते-उड़ते-पलते देखता हो, तो वह ख़ास हो जाता है। इन अहसासों से भरे ख़्वाब को गोलघर की शक्ल में हक़ीक़त में बदला था- भोपाल रियासत की तीसरी नवाब शाहजहां बेगम ने। शाहजहांनाबाद की बसाहट के बीच खड़ा गोलघर केवल गोलाकार इमारत नहीं है, बल्कि अपने समय के उस दौर का गवाह है, जब स्थापत्य और वास्तुकला अपने सुनहरे दौर में थी। इस छोटी से इमारत को बनवाते समय बेगम शाहजहां ने शायद यह सोचा होगा कि ज़िंदगी हो या फ़न (कला), उसे सीमाओं या कोनों में क्यों बांधा जाए।

इस मर्तबा सुबह की सैर पर निकले क़दम इस हफ्ते शाहजहांनाबाद इलाके में बने गोलघर जाकर थम गए। गोलघर को भीतर-बाहर से घूमा, उसे छुआ, टटोला और कुछ पल उसके साथ जीने की कोशिश की। पुराने जानकारों से मिलकर, किताबों को पढ़कर इसके इतिहास, किस्से, कहानियों को जानने और उस दौर के नजरिए को महसूसने की कवायद की। कभी लोग गोलघर को गुलशन-ए-आलम, जन्नत बाग, चिड़ीखाना, कभी शहर का पेट, कभी कुर्क अमीन (राजस्व) का दफ्तर भी कहा करते थे। यहां एक वक्त में अस्तबल भी था। एक दौर में यह रेल्वे पुलिस का दफ्तर और ट्रेनिंग सेंटर भी रहा है।

कड़वी सच्चाई यह है कि गोलघर के बारे में लोगों को बहुत ज्यादा जानकारी नहीं है। परीबाजार, बाबे आली मैदान के रास्ते आगे बढ़ते हुए जब अगले तिराहे पर पहुंचेंगे तो कोने में ही आपको गोलघर का बोर्ड लगा मिल जाएगा, जिस पर लिखा है राज्य संरक्षित इमारत गुलशन -ए-आलम। अगल-बगल से गलियां झांकती मिल जाएंगीं।

दशकों तक गुमनामी के साए में रहे गोलघर की तकदीर दो साल पहले मार्च 2024 में तब बदली, जब राज्य सरकार ने गोलघर की इमारत को एक बार फिर सजा-संवार इसे आधुनिक संग्रहालय बनाने की घोषणा के साथ लोकार्पण किया। इस साल जनवरी के महीने में जब यहां तीन दिन का जश्न-ए-उर्दू कार्यक्रम हुआ और शायरों ने मोहब्बत के गीत गाए, अपनी शायरी और कलाम पढ़े, तो एक बार फिर अपने बीच आवाम की आवाज़ें सुनकर गोलघर ऐसे खिल उठा, जैसे उसका इतिहास उसके भीतरी गोल गुंबद की तरह 360 डिग्री घूम गया हो। पर्यटन विभाग इसे ऐसे बहुउद्देश्यीय कला केन्द्र के रूप विकसित करने जा रहा है, जहां शिल्प, संगीत और व्यंजन तीनों एक जगह मिलें। पास के पुराने अस्तबल को भी दुरुस्त कर गौहर महल की तर्ज़ पर दुकानों और प्रदर्शनी स्थलों में बदला जा रहा है।

भोपाल स्टेट के गजेटियर में दर्ज इतिहास बताता है कि गोलघर की तामीर भोपाल की तीसरी महिला नवाब शाहजहांबेगम ने सन् 1868-1901 के दौर में कराई थी। अपनी तखतपोशी के बाद शाहजहांनाबाद को बसाने वाली शाहजहां बेगम ने इसे बनाने की जिम्मेदारी एक अंग्रेज इंजीनियर कुक और कंस्ट्रक्शन इंजीनियर मुंशी हुसैन खां को दी थी। गोलघर को बनवाने के पीछे संभवतः उनकी कल्पना थी कि ऐसी इमारत हो, जिसमें इंसान हो या परिंदे, सुकून से रह सकें। यहां से बेगम शाहजहां का दफ्तर भी चलता था। दफ्तर में काम करने वाले कारिंदों के रहने के लिए गोलघर के पास 12 महल नामक इलाका विकसित किया गया था। आज भी गोलघर से सटी एक मस्जिद भी है, जो मस्जिद चिड़ीखाना के नाम से जानी जाती है।

शुरूआत में गोलघर को एक शानदार चिड़ियाखाना के तौर पर बनवाया गया। सीई लुअर्ड द्वारा संकलित 1908 के भोपाल स्टेट गजेटियर में भी इसे (Aviary) एवियरी यानी

चिड़ी खाना के रूप में दर्ज किया गया है। बताते हैं कि यहां सोने-चांदी के पिंजरों में देश-विदेश के नायाब परिंदे रखे जाते थे। हालांकि मैं व्यक्तिगत तौर पर किसी भी परिंदे को पिंजरे में रखने के खिलाफ और उनकी आजादी का हिमायती हूं। पिंजरा चाहे सोने का हो या चांदी का, कोई भी क़ैद नहीं रहना चाहता। ऐसे किस्से हैं कि क़ुदरती माहौल शाहजहांबेगम को बहुत पसंद था। उनका विश्वास था कि जहां परिंदों की चहचहाट में ख़ुदा की इबादत होती है। कहा जाता है कि उन्होंने वसीयत जैसी हिदायत दी थी कि उनके द्वारा बसाए गए इस इलाके की हर इमारत-चाहे वो गोलघर हो या ताज-उल-मसाजिद-इंसानों के साथ-साथ परिंदों के लिए भी उतनी ही खुली होनी चाहिए।

'गोलघर' से 'बया पक्षी' से जुड़ी एक बेहद दिलचस्प दास्तां है, वो ये कि शाहजहां बेगम जानती थीं कि 'बया' पेड़ों की टहनियों में लटकते खूबसूरत घोसले बनाती है। इसलिए गोलघर के भीतर रेशमी धागे, सोने के तिनके और चांदी के तार बिछवाए गए, ताकि 'बया' उन्हीं से अपना घोंसला बुने। कहा जाता है कि सोने-चांदी से बना ऐसा ही बेहद खूबसूरत घोंसला इंग्लैंड की रानी विक्टोरिया को भेंट किया गया था। बताते हैं कि आज भी यह घोंसला इंग्लैंड के किसी संग्रहालय में मौजूद है। इतिहास बताता है कि शाहजहां बेगम का दौर हो या उनके बाद सुल्तान जहां बेगम का शासन, गोलघर से गुप्त दान की रवायत भी जुड़ी रही है। कहा जाता है कि ज़रूरतमंद बाहरी दरवाज़े पर खड़े रहते, अंदर से इस तरह मदद पहुंचाई जाती कि न देने वाला दिखे, न लेने वाला शर्मिंदा हो। इंसानियत के साथ इज़्ज़त देने का यह नजरिया आज भी सीख देता है।

वेनेसा आर्किटेक्टर की शैली बना गोलघर को आप स्थापत्य की शान भी कह सकते हैं। इसकी पूरी इमारत गोलाकार संरचना में बनी है। हर चार कदम पर एक दरवाजा, 24 मेहराबदार दरवाजे और भीतर ऊंचा गुंबद इस इमारत को बेमिसाल बनाते हैं। मोटी दीवारें तापमान को काबू में रखते हैं। कुल मिलाकर बाहर की ओर 32, भीतर और केंद्र में अलग-अलग प्रवेश और गुंबद के अंदर की महीन मीनाकारी नक्काशी, इसकी कारीगरी और फ़नकारी का सबूत हैं। गोलघर के भीतर गुंबद के आकार का एक ही कमरा है, जिसके बीचों-बीच खड़े होने पर इसके चारों तरफ लगे पत्थर 360 डिग्री पर दिखाई देते हैं। 360 डिग्री का दृश्य और एक ही कमरे का अस्तित्व गोलघर को सिर्फ एक इमारत ही नहीं अनुभव बना देता है। वहां खड़े होने पर ऐसा लगता है जैसे पैमानों और ज्यामिति का गणित एक कविता में बदल गया हो। कल्पना कीजिए एक विशालकाय गुंबदनुमा कमरे के बीचों-बीच आप खड़े हैं। यहां न कोई कोना है, जो आपकी नजर को रोक सके, न कोई दीवार , जो आपके आड़े आए। पत्थरों का घेरा आपको ऐसे समेट लेता है, जैसे वक्त ठहर गया हो, मानो आसमान सिमट तक इस दायरे में आ गया हो, । यहां आपकी एक आहट भी दीवारों से टकराकर एक गूंज बन जाती है। ऐसा लगता है, जैसे इमारत आपसे बात कर रही हो। एक अजब भी शांति का अहसास होता है।

एक कहावत है कि वक्त का पहिया कभी थमता नहीं। लिहाजा वक़्त बदला, हालात बदले। सुल्तानजहां बेगम का दौर आया। पहले विश्वयुद्ध (1914-1918) के दौरान या कहें अकाल या जंग के साए पड़े, तो गोलघर को अनाज भंडार में तब्दील कर दिया गया। अवाम इसे 'शहर का पेट' कहने लगी, क्योंकि यहां जमा अनाज उसे भूख से लड़ने की ताकत देता था। कई बार लगता है कि उस वक्त की व्यवस्था में आज की सार्वजनिक वितरण प्रणाली(पीडीएस) की जड़ें दिखाई देती हैं, जहां हुकूमत चाहे कोई भी हो, अपनी रिआया यानी जनता की भूख से बेख़बर नहीं रहती।

आप केवल यह नहीं कह सकते कि गोलघर में केवल दफ़्तर लगता था या अनाज का भंडार रहा, बल्कि यह फ़न और तहज़ीब का मरकज़ भी था। नवाब सुल्तान जहां बेगम के दौर में यहां महिलाओं को नक़्क़ाशी और ज़रदोज़ी सिखाई गई। हुनर रोजगार में बदलता गया। मशहूर भोपाली बटुआ इसी रवायत की सौग़ात है।

यदि मौजूदा वक़्त की बात करें तो राज्य संरक्षित स्मारक गोलघर में विकसित किए गए संग्रहालय में आप भोपाल का पूरा इतिहास देख सकते हैं। इसमें नवाबी दौर से लेकर अंग्रेजी हुकूमत तक वह उसके बाद भोपाल रियासत के विलय तक सारी जानकारी मिल जाएगी। यहां रखे नवाबी दौर के हथियार, सिक्के, पोशाकें, दुर्लभ दस्तावेज, नवाबों, बेगमों, इमारतों की तस्वीरें आपको इतिहास का अक्स दिखाती हैं। साथ ही कई वर्ष पुराने पानदान, पीकदान, भोपाली बटुए, ट्रे, सुराहीदार लोटा, कटोरा, टिफिन और बाट रखे हुए हैं, जो गुज़रे दौर की कहानी कहते नजर आते हैं। इसके इर्द-गिर्द आज भी पूरा बाजार विकसित है, गलियां गुजर कर दूसरे इलाकों से जुड़ जाती। बगल में आसरा वृद्धजन सेवा केन्द्र है, जिसमें ऊगे पेड़ पर लटकी मुनगे की फलियों को लेकर गाहे-बगाहे वाद-विवाद हो जाता है। दरअसल गोलघर केवल इमारत नहीं, भोपाल के गली-मोहल्ला संस्कृति की जिंदा मिसाल हैं। पर गोलघर आज भी बहुत कम लोग जाते हैं, क्योंकि उसके इतिहास और महत्व के बारे में लोगों को मालूम ही नहीं। यहां टूरिस्ट बढ़ सकते हैं, बशर्ते सरकार कोशिश करे। गोलघर आज भी हम सबसे खामोशी से सवाल करता है कि क्या हम तरक़्क़ी करते हुए अपनी विरासत की कद्र कर पा रहे हैं। इसका भविष्य तभी है, जब इसे जिंदा विरासत की तरह जिया जाए।

भोपाल बदल रहा है, सड़कें चौड़ी हो रही हैं और ऊंची इमारतें खड़ी हो रही हैं, लेकिन गोलघर और उसका वजूद अपनी जगह कायम है-हमें यह याद दिलाने के लिए कि चकाचौंध और आधुनिकता की दौड़ में अपनी जड़ों और विरासत को सहेजना कितना जरूरी है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला संपन्न

संगठन की शक्ति प्रशिक्षित और समर्पित कार्यकर्ताओं से ही बढ़ती है: रणवीरसिंह रावत

धार। भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महा अभियान 2026 के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यशाला जिला मुख्यालय स्थित भाजपा जिला कार्यालय में संपन्न हुई। कार्यशाला को भाजपा संगठन इंदौर संभाग रणवीर सिंह रावत,केंद्रीय राज्यमंत्री क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती,प्रशिक्षण संभाग प्रभारी दिलीप पटोंदिया सह प्रभारी अनंत व अशोक अधिकारी जिला संगठन प्रभारी सुभाष कोठारी , विधायक नीना वर्मा , पुर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ने संबोधित किया। इस दौरान जिला टोली से राकेश पटेल, अक्षय शर्मा , अल्पना जोशी ,कपिल निनामा मंचासीन रहें।

कार्यशाला का शुभारंभ भारत माता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर माल्यार्पण एवं वंदे मातरम् के साथ किया गया। इसके बाद अतिथियो का स्वागत किया गया। जिला टोली के अक्षय शर्मा ने वर्ग गीत लिया।

11 मार्च से 14 अप्रैल तक सम्पन्न होगी भाजपा के सभी मंडलों की प्रशिक्षण कार्यशालाएँ

अध्यक्षीय उद्धबोधन देते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने कहा कि भाजपा संगठन में प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य कार्यकर्ताओं को लगातार सीखने, आत्ममंथन करने और जनसेवा के प्रति सदैव समर्पित रहने के लिए प्रशिक्षित करना है। उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के सिद्धांत को कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत बताते हुए कहा कि सेवा, समर्पण और समन्वय ही संगठन की वास्तविक शक्ति हैं। जिले के सभी 18 मंडलों में 11 मार्च से 14 अप्रैल तक मंडलों व बूथ के प्रशिक्षण कार्यशालाएँ हमें सम्पन्न करना है।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष व संभाग संगठन प्रभारी रणवीर सिंह रावत ने संगठन की कार्यपद्धति, उसके विकास एवं विस्तार, विचारधारा, सैद्धांतिक भूमिका, रीति-नीति और प्रत्येक कार्यकर्ता के दायित्वों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण कार्यकर्ता को विचारधारा, संगठन की कार्यपद्धति और जिम्मेदारियों से परिचित कराता है। यह नए कार्यकर्ताओं को दिशा, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता प्रदान करता। संगठन की शक्ति प्रशिक्षित और समर्पित कार्यकर्ताओं से ही बढ़ती है। संगठन को सशक्त बनाने के लिए समन्वय और अनुशासन पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण में बड़े-छोटे का भाव खत्म हो जाता है। यहां हम सभी को कुछ न कुछ सीखने को अवश्य मिलता है। विचारधारा, हमारी कार्यपद्धति, संगठन की संरचना को प्राप्त करने के लिए हमारे साधन हैं। कम समय में पद प्राप्त करने से अनुशासनहीनता का भाव झलकता है। जनसंघ से लेकर आज तक पार्टी ने जो संकल्प लिए उन्हें पूरा किया। जब जब सरकार हमारी बनी हमने अच्छे परिणाम दिए। हमारी नियति व नियत से आमजनता हमारे साथ जुड़ी। हमेशा नई तकनीकी व नवाचार का उपयोग करते रहे। यह प्रशिक्षण मण्डल व बूथ स्तर पर हमें सक्रियता से समय सीमा में संपन्न करना है।

अतिथि उद्बोधन देते हुए केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि समृद्ध भारत की संकल्पना के लक्ष्य को प्राप्त करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संगठन की संरचना आवश्यक है। केंद्र व राज्य सरकार ने जनहितैषी योजनाएं बना रखी है। हमारा कर्तव्य है कि हमें गांव मजरे टोले में अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक जानकारी देकर उन्हें योजनाओं की जानकारी देकर लाभान्वित करना है। प्रशिक्षण की भूमिका को लेकर संभागीय प्रशिक्षण सह प्रभारी अनंत पंवार ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यकर्ताओ का निर्माण करता है। संगठन में प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है, जिनमें लगातार सीखने, आत्ममंथन करने व जनसेवा हेतु सदैव समर्पित रहने के साथ ही सैद्धांतिक और व्यवहारिक विषयों पर समय-समय पर अपेक्षित कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण होता है।

'पांच परिवर्तन' विषय पर दी गई जानकारी

द्वितीय सत्र में पीपीटी पँच परिवर्तन विषय पर संभागीय प्रशिक्षण सह प्रभारी अशोक अधिकारी ने प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि हमे समाज मे समरसता के भाव के साथ काम करना है। जातिगत भेदभाव को मिटाकर समाज में एकता स्थापित करना है। स्वदेशी उत्पादों को अपनाना है। पर्यावरण संरक्षण के लिए भी हमे समाज मे सक्रियता से काम करना है। जल संरक्षण, प्लास्टिक निषेध और वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के लिए समाज मे जागरूकता लाना है। कुटुंब प्रबोधन पर कहा कि परिवार को भारतीय संस्कारों से जोड़कर एक अनुशासित व स्वस्थ समाज का निर्माण करना। परिवार में मिलकर रहे व एक साथ भोजन परिवार जनों के साथ बैठकर करे।

प्रशिक्षण संभागीय प्रभारी दिलीप पटोदिया ने जिज्ञासा समाधान को लेकर प्रशिक्षणार्थियों से चर्चा की। अंत मे समापन सत्र में जिला संगठन प्रभारी सुभाष कोठारी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि इस वर्ग को करने के बाद पार्टी के पास प्रशिक्षित तथा पूर्ण अनुशासित कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी संख्या होगी।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि आयोजित कार्यशाला में अपेक्षित श्रेणी में भाजपा के समस्त जिला पदाधिकारीगण, मंडल अध्यक्षगण मंडल प्रभारीगण, मोर्चा जिला अध्यक्ष व महामंत्री प्रकोष्ठ जिला संयोजक मंडल टोली के सदस्यगण, जिला पंचायत सदस्य सहीत अपेक्षित श्रेणी के पदाधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

कार्यशाला का संचालन भाजपा जिला महामंत्री राकेश पटेल ने किया। आभार टोली के अक्षय शर्मा ने माना।

पुलिस लाईन धार में लॉन टेनिस कोर्ट का शुभारंभ

धार। पुलिस अधिकारी कर्मचारियों के बालक एवं बालिकाओं को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के उद्देश्य से पुलिस लाईन धार खेल परिसर स्थित लॉन टेनिस कोर्ट का जिर्णोद्धार उपरांत पुलिस उप महानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक

धार मयंक अवस्थी(आईपीएस) के द्वारा शुभारंभ किया गया।

इस शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (दक्षिण) विजय डावर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (उत्तर) पारूल बेलापुरकर, नगर पुलिस अधीक्षक धार सुजावल जग्गा(आईपीएस), उप पुलिस अधीक्षक अजाक आनंद तिवारी, रक्षित निरीक्षक पुरूषोत्तम बिश्नोई, जिला खेल एवं युवा कल्याण विभाग अधिकारी राजेश शाक्य एवं पुलिस लाईन धार तथा खेल विभाग के पुलिस अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

खोया पाया की जानकारी दें पुलिस को बालिका को मिलाया परिजनों से

सोहागपुर। खोया पाया की जानकारी दें सोहागपुर पुलिस के मोबाइल व्हाट्सएप नंबर 77010522760 विगत दिवस मारूपुरा स्थित मेडिकल दुकान संचालक ने सोहागपुर थाना में इसी नंबर पर सूचना दी थी।कि एक बच्ची जो करीबन 6 वर्ष की है ।अपने परिजनों से बिछड़ कर घूमते हुई आ गई है ।कृपया आवश्यक कार्रवाई करने का कष्ट करें ।इस सूचना को गंभीरता से तत्काल चीता ड्यूटी

में लगे पुलिस कर्मी मनोहर दायमा एवं रामकृष्ण को संबंधित मेडिकल दुकान पर नगर निरीक्षक उषा मरावी ने भेजा गया वहां बच्ची घर का पूरा पता अन्य जानकारी नहीं बता पा रही थी । इसकी खोजबीन की गई। जानकारी के आधार पर 6 वर्षीय बालिका को 20 मिनट के अंदर परिजनों जनों को सौंपा गया। नगर निरीक्षक उषा मरावी एवं एएसआई गणेश राय ने नागरिकों को आगाह किया है कि छोटे बच्चों को ऐसा अकेला न छोड़ा करें । जिससे कोई अनहोनी घटना न हो । नागरिकों से आव्हान किया है कि कोई भी घटना घटित हो तो सभी आमजन उक्त मोबाइल नंबर पर तत्काल सूचित कर सकते हैं।

कलियासोत डैम के किनारे से 9 डेयरी हटाईं

एनजीटी के आदेश के बाद प्रशासन की कार्रवाई, नोंकझोंक भी हुई

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कलियासोत डैम किनारे अवैध रूप से टीन शेड डालकर बनाई गई डेयरियों पर शनिवार को बड़ी कार्रवाई हुई। 9 डेयरियों को जेसीबी की मदद से हटा दिया गया। नेशनल ग्रीन ट्रूब्नल (एनजीटी) के आदेश पर कार्रवाई की गई। टीटी नगर तहसीलदार कुणाल राउत की मौजूदगी में राजस्व, नगर निगम और पुलिस ने यह कार्रवाई की। दरअसल, सिरपुर में कलियासोत डैम किनारे ही 18 डेयरियां अवैध रूप से तन गई थी। यहां पर पशु पालन भी किया जा रहा था। साथ ही दुग्ध उत्पादन भी हो रहा था।

अतिक्रमण हटाने का विरोध भी जताया

प्रशासन की इस कार्रवाई को लेकर लोगों ने विरोध भी जताया, लेकिन ये डेयरियां अतिक्रमण के दायरे में आ रही थी। इसलिए अफसरों ने उनकी एक न सुनी और कार्रवाई जारी रखी। जेसीबी की मदद से एक के बाद एक डेयरियां तोड़ दी गई।

9 और हटाएंगे- तहसीलदार राउत ने बताया कि एनजीटी के आदेश पर सिरपुर गांव में 9 डेयरी को हटाया गया है। बाकी 9 और हटाएंगे।

संभागीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स पर आवश्यक सुधार शीघ्र पूर्ण कराएं: संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी

सोहागपुर। संभागीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक संभागायुक्त श्रीकृष्ण गोपाल तिवारी की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई।इस बैठक में पुलिस महानिरीक्षक मिथलेश कुमार शुक्ला, मुख्य वन संरक्षक मधु वी. राज, वन संरक्षक अशोक कुमार, कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना ,कलेक्टर बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी,कलेक्टर हरदा सिद्धार्थ जैन, पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन, पुलिस अधीक्षक हरदा, पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम साई कृ?ण एस थोटा, डीएफओ नवीन गर्ग, डीएफओ लक्ष्मीकांत वासनिक सहित बैतूल, हरदा एवं नर्मदापुरम जिलों के जिला पंचायत सीईओ एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर संभागायुक्त श्री तिवारी ने संभाग के तीनों जिलों में राहवीर योजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। ताकि सड़क दुर्घटनाओं में घायलों को त्वरित सहायता मिल सके तथा जीवन बचाने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहन प्राप्त हो। कैशलेश स्कीम और राहत योजना पर विस्तृत प्रेजेंटेशन भी दिया ज्ञान। आपने कलेक्टरों एवं पुलिस अधीक्षकों को

निर्देशित किया कि ऐसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों की पहचान कर जोनल प्लान तैयार करें, जहां आपातकालीन वाहनों के आवागमन में बाधा आती है।इसबैठक में तीनों जिलों में चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स तथा सुधारात्मक कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई। संभागायुक्त ने निर्देश दिए कि ब्लैक स्पॉट्स पर दीर्घकालिक सुधार एवं आवश्यकतानुसार रिमूवल कार्य किया जाए। संबंधित सड़क निर्माण विभाग आवश्यक प्राक्कलन तैयार कर प्रस्ताव शासन को प्रेषित करें।

आपने आगे कहा कि प्रमुख सड़कों से जुड़ने वाली गौण सड़कों के जंक्शनों पर सुरक्षा मानकों के अनुरूप सुधार एवं मरम्मत कार्य किए जाएं। परिवहन विभाग, लोक निर्माण विभाग तथा सड़क विकास निगम द्वारा सेफ्टी ऑडिट के प्रमुख बिंदुओं पर नियमित समीक्षा कर सड़क सुरक्षा समिति की बैठकें आयोजित करें।

संभागायुक्त श्री तिवारी ने गत वर्ष तीनों जिलों में हुई सड़क दुर्घटनाओं एवं मृत्यु के प्रकरणों की समीक्षा करते आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस छोटा नर्मदापुरम ने जिले में सड़क सुरक्षा , संवेदनशील स्थलों पर सीपीआर प्रशिक्षण तथा राहवीर एवं कैशलेस योजना के संबंध में जनजागरूकता गतिविधियों की जानकारी दी । जिससे दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को समय पर आवश्यक उपचार उपलब्ध कराया जा सके।

नगर निरीक्षक ने होली, रंगपंचमी त्यौहारों को लेकर मुख्य स्थलों का किया भ्रमण

सोहागपुर। आगामी होली रंगपंचमी आदि त्यौहारों को लेकर सोहागपुर पुलिस ने नगर निरीक्षक उषा मरावी के साथ कल शाम नगर के प्रमुख स्थानों पर दल बल के भ्रमण किया। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर जिले भर में शांति व्यवस्था को लेकर उक्त भ्रमण किया गया है। इस दल बल के साथ संदिग्धो पर भी नजर रखी जा रही है।

इसके अलावा होटल, लॉज,ढाबों की चेकिंग कराई जा रही है।इस दल ने पलकमती नदी पुल, पुराने बस स्टैंड आदि स्थानों पर निरीक्षण किया। वहीं रात में सोहागपुर रेल्वे स्टेशन पर भी सोहागपुर के दोनों प्लेटफार्म पर सभी यात्रियों पर निगाह रखी। कि कहीं कोई संदिग्ध नागरिक तो नहीं है। इसके पूर्व सड़कों पर रास्ते में खड़े दो पहिया चार पहिया वाहन चालकों को हिदायत देने के साथ चालानी कार्रवाई की गई। उल्लेखनीय है सोहागपुर में होली से अधिक रंगपंचमी का उत्सव उत्साह के साथ विशाल रूप से मनाया जाता है।

दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री शाह से मिले सीएम

राजनीतिक और प्रशासनिक मामलों पर हुई चर्चा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दिल्ली प्रवास के दौरान केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। इस दौरान दोनों ने ही नेताओं के बीच राजनीतिक और प्रशासनिक मामलों को लेकर चर्चा हुई है। शाह के बाद मुख्यमंत्री कुछ और केंद्रीय मंत्रियों और संगठन नेताओं के साथ भी मुलाकात करेंगे।

दिल्ली प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात के दौरान अलग-अलग विभागों से संबंधित बजट की राशि जारी करने की मांग भी करेंगे। चालू वित्त वर्ष के खत्म होने में अब एक महीने का ही समय बचा है। ऐसे में बजट की जो भी राशि बची है उसे 31 मार्च के पहले राज्य सरकार को देने के लिए अनुरोध किया जाएगा।

राज्य सरकार को चालू वित्त वर्ष में केंद्र से 44000 करोड रुपए से अधिक की राशि मिलना है लेकिन जनवरी तक की रिपोर्ट के अनुसार 9.50 हजार करोड़ रुपए ही राज्य सरकार को मिल पाए हैं ऐसे में बकाया राशि के लिए मुख्यमंत्री केंद्रीय मंत्रियों से आग्रह करेंगे इसके

बाद मार्च में संबंधित विभागों के मंत्री और प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी भी दिल्ली में संबंधित विभागों के मंत्री और अधिकारियों से मुलाकात करने वाले हैं।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने नई दिल्ली में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन से भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के साथ सौजन्य भेंट की। बताया जाता है कि इस मुलाकात के दौरान प्रदेश में संगठनात्मक बदलाव और आने वाले समय में संभावित नियुक्तियों को लेकर चर्चा की गई है।

केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह से मिले मंत्री प्रहलाद पटेल- प्रदेश के पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग के मंत्री प्रहलाद पटेल ने आज दिल्ली प्रवास के दौरान केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर दो महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई, निराहार रहकर सतत चौथी नर्मदा करनेवाले पूज्य दादा गुरु का डीआरडीओ द्वारा उनका वैज्ञानिक अध्ययन कराने का आग्रह किया गया एवं स्वराधीश भारत बालवल्ली द्वारा आयोजित बलिदानी वीरनारी कार्यक्रम के संबंध में आग्रह किया गया।

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्ष 1928 में आज ही के दिन महान वैज्ञानिक डॉ. सीवी रमन की खोज रमन प्रभाव से दुनिया परिचित हुई थी। इस खोज ने विज्ञान जगत को नई दिशा दी, इस उपलक्ष्य में ही 28 फरवरी का दिन, देश में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। विज्ञान के प्रति समाज में जागरूकता लाना और वैज्ञानिक सोच विकसित करना राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उद्देश्य है। ये अवसर विज्ञान के लिए समर्पित प्रतिभाओं को विश्व कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता रहेगा।

'शक्ल अच्छी नहीं तो क्या हुआ...सरकारी नौकरी तो है'

रीवा (नप्र)। मध्य प्रदेश के रीवा में पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में ट्रेनिंग ले रहे 6 कॉन्स्टेबल ने वर्दी पहनकर रील्स बनाई है। रील्स में कॉन्स्टेबल कह रहे हैं कि शक्ल अच्छी नहीं है तो क्या हुआ, सरकारी नौकरी तो है ना। रील्स बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।

रीवा पुलिस प्रशिक्षण शाला के पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र कुमार जैन ने रील्स वायरल होने के बाद सभी कॉन्स्टेबल को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। नोटिस में लिखा है कि आपके बोले गए डायलॉग से पुलिस विभाग की गरिमा धूमिल हुई है। आपके खिलाफ क्यों न कार्रवाई की जाए।

'मटियामेट ग्रुप' में पोस्ट की गई थी रील्स- जानकारी के अनुसार 25 फरवरी 2026 को दोपहर 3:04 बजे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (ट्विटर) पर बने मटियामेट ग्रुप में वर्दी पहने नव आरक्षकों ने

रील पोस्ट की थी। रात 8:04 बजे तक इस रील को 5,010 से अधिक बार देखा जा चुका था।

रील्स वायरल होने के बाद लोगों ने अलग-अलग कमेंट्स किए। इममें ज्यादातर कमेंट्स पुलिस विभाग के खिलाफ थे। ये रील्स पुलिस अधिकारियों के पास पहुंची। इसके बाद पुलिस विभाग ने आरक्षकों को नोटिस जारी किया।

रील्स में आरक्षकों ने बोले ये डायलॉग- शक्ल अच्छी नहीं है तो क्या हुआ, सरकारी नौकरी तो हैज्हमारे पास पैसा नहीं है तो क्या हुआ, मंथली तो आता है ना हमारे पास कपड़ा नहीं है तो क्या हुआ, वर्दी तो है ना।

रील बनाने वाले आरक्षकों के नाम- अनिल कड़ोदिया- जिला देवास, आनंद कुलवरे- जिला इंदौर, प्रदीप यादव- जिला उज्जैन, राज कुमार सैन्धव - जिला उज्जैन, गोनू सतबाढ़िया - जिला उज्जैन, सुरजीत गर्ग - जिला विदिशा।

जान्हवी कपूर- राम चरण की 'पेड्डी' का इंतजार

राम चरण और जान्हवी कपूर की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'पेड्डी' लंबे समय से चर्चा में बनी है। दर्शक इसकी रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। साल 2026 की बड़ी फिल्मों में गिनी जा रही यह फिल्म फिलहाल सिनेमाघरों तक पहुंचने की राह देख रही है। शुरुआती योजना के मुताबिक इसे अप्रैल 2026 में रिलीज किया जाना था। लेकिन, अब संकेत मिल रहे हैं कि इसकी रिलीज डेट में एक बार फिर बदलाव हो सकता है। लगातार आ रही रिपोर्ट्स ने फैंस की उत्सुकता और भी बढ़ा दी है।

साल 2026 की शुरुआत से अब तक बॉलीवुड और साउथ फिल्म इंडस्ट्री की कई फिल्में रिलीज हुई हैं, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर कोई बड़ा धमाका देखने को नहीं मिला। कई फिल्मों ने ठीक-ठाक प्रदर्शन किया, मगर ऐसी कोई फिल्म सामने नहीं आई जो रिकॉर्डतोड़ कमाई कर इंडस्ट्री को नई ऊर्जा दे सके। ऐसे माहौल में आने वाले महीनों की बड़ी रिलीज पर सबकी नजर टिकी हुई है। मार्च के महीने में कुछ बड़ी फिल्मों को रिलीज किए जाने की तैयारी है। एक तरफ 'धुरंधर 2' को लेकर चर्चा है तो दूसरी ओर यश की फिल्म 'टॉक्सिक' भी सुर्खियों में है। इन दोनों फिल्मों को लेकर दर्शकों के बीच जबरदस्त उत्साह देखा जा रहा है। इसके अलावा पावर स्टार पवन कल्याण की फिल्म 'उस्ताद भगत सिंह' को लेकर भी माहौल गरम है और फैंस उसकी रिलीज का इंतजार कर रहे हैं।

इन चर्चित फिल्मों के बीच कुछ ऐसी फिल्में भी हैं जिनका बज़ तो बना हुआ है, लेकिन उनकी रिलीज डेट को लेकर अब तक स्पष्टता नहीं है। इनमें थलपति विजय की 'जन नायगन' और राम चरण की 'पेड्डी' शामिल हैं। दोनों ही फिल्मों को बड़े पैमाने पर बनाया जा रहा है और इनसे बॉक्स ऑफिस को काफी उम्मीदें हैं, लेकिन आधिकारिक घोषणाओं की कमी के कारण असमंजस की स्थिति बनी हुई है। राम चरण और जान्हवी कपूर की 'पेड्डी' खास तौर पर इसलिए भी चर्चा में है। क्योंकि, यह पहली बार है जब दोनों कलाकार एक साथ सिल्वर स्क्रीन पर नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन बुची बाबू सना कर रहे हैं, जो अपनी अलग शैली और भावनात्मक कहानी कहने के अंदाज के लिए जाने जाते हैं। यह फिल्म पैन इंडिया स्तर पर रिलीज की जानी है, यानी इसे कई भाषाओं में एक साथ प्रदर्शित किया जाएगा। यही वजह है कि मेकर्स रिलीज डेट को लेकर बेहद सावधानी बरत रहे हैं।

फिलहाल फिल्म की आधिकारिक रिलीज डेट 30 अप्रैल 2026 बताई जा रही है। हालांकि तेलुगू

फिल्म पोर्टल्स की ताजा रिपोर्ट्स के अनुसार मेकर्स इस तारीख पर पुनर्विचार कर रहे हैं और संभव है कि फिल्म को जून 2026 में रिलीज किया जाए। अभी तक इस संबंध में कोई औपचारिक घोषणा नहीं की गई है, लेकिन इंडस्ट्री में यह चर्चा जोरों पर है कि पोस्ट-प्रोडक्शन, विजुअल इफेक्ट्स और सही बॉक्स ऑफिस विंडो को ध्यान में रखते हुए रिलीज को आगे बढ़ाया जा सकता है। रिपोर्ट्स यह भी कहती हैं कि होली से पहले 2 मार्च को फिल्म का दूसरा गाना रिलीज करने की तैयारी चल रही है। हालांकि इस बारे में भी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पैन इंडिया फिल्मों में म्यूजिक प्रमोशन का अहम रोल होता है, इसलिए माना जा रहा है कि गानों के जरिए फिल्म का माहौल तैयार किया जाएगा और दर्शकों के बीच उत्साह बढ़ाया जाएगा।

राम चरण के करियर के लिहाज से 'पेड्डी' बेहद महत्वपूर्ण फिल्म मानी जा रही है। उन्होंने ऑस्कर विजेता फिल्म 'आरआरआर' में दमदार अभिनय किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। इस फिल्म ने उन्हें पैन इंडिया स्टार के रूप में स्थापित कर दिया। लेकिन इसके बाद रिलीज हुई उनकी फिल्म 'गेम चेंजर' बॉक्स ऑफिस पर उम्मीदों के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकी। लगभग 350 करोड़ रुपये के भारी बजट में बनी इस फिल्म ने करीब 200 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया और इसे सुपरफ्लॉप माना गया। ऐसे में 'पेड्डी' राम चरण के लिए एक तरह से वापसी का मौका है। दर्शक और ट्रेड विश्लेषक दोनों ही इस बात पर नजर रखे हुए हैं कि क्या यह फिल्म उन्हें फिर से सफलता की राह पर लौटा पाएगी।

दूसरी ओर जान्हवी कपूर के लिए भी यह फिल्म बेहद अहम है। उनकी पिछली फिल्म 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं हो सकी। लगातार फ्लॉप के बाद उन्हें एक बड़ी हिट की जरूरत है, और 'पेड्डी' उनके लिए वह अवसर बन सकती है। साउथ के बड़े स्टार के साथ पैन इंडिया प्रोजेक्ट में काम करना उनके करियर को नई दिशा दे सकता है और उन्हें व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुंचा सकता है। अगर 'पेड्डी' की रिलीज अप्रैल से खिसककर जून में जाती है, तो मेकर्स को प्रमोशन के लिए अतिरिक्त समय मिल जाएगा और वे अन्य बड़ी फिल्मों से सीधी टक्कर से भी बच सकते हैं।

रणबीर की फिल्म से दीपिका को बाहर निकलवाया

बॉलीवुड के दो कपल्स इस वक्त खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं, वजह है उनकी फिल्में। पहला कपल आलिया भट्ट और रणबीर कपूर, जहां दोनों 'लव एंड वॉर' में साथ दिखने वाले हैं. तो एक्टर की 'रामायण' और 'एनिमल पार्क' भी पाइपलाइन में है। जबकि, दूसरे कपल हैं रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण। जहां एक्टर 'धुरंधर' के बाद पार्ट 2 में बिजी हैं. तो इसके बाद 'प्रलय' पर भी काम करना है। जबकि, दीपिका को इस साल 'किंग' में देखा जाएगा और अल्लू अर्जुन की फिल्म में लीड एक्ट्रेस हैं। कुछ वक्त पहले रणबीर कपूर ने इंस्टाग्राम लाइव सेशन में बताया था कि वो आरके प्रोडक्शन के तहत एक फिल्म बना रहे हैं।

इस फिल्म में फीमेल लीड के तौर पर दीपिका पादुकोण का नाम सामने आया था। लेकिन, अब

नया अपडेट है कि वो फिल्म से बाहर हो गई है। साथ ही पूरा मसला रणवीर सिंह और आलिया भट्ट से जुड़ा हुआ बताया जा रहा। इस वक्त रेडिट पर एक पोस्ट जमकर वायरल हो रही है। कहा जा रहा कि रणवीर सिंह के प्रोडक्शन में बनने वाली फिल्म 'प्रलय' में आलिया भट्ट के काम करने की इच्छा थी। उन्होंने यह बात एक्टर के सामने रखी भी थी। बावजूद इसके उन्हें फिल्म में नहीं लिया गया। इसके बाद रणबीर-दीपिका के साथ काम करने पर खतरा आ गया। पर, क्यों रणवीर सिंह की फिल्म के लिए उन्हें कंसिडर नहीं किया गया।

रियल बॉक्स

सिनेमा की होली में मोहब्बत के रंग

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

बॉलीवुड हम भारतीयों के लिए होली केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि भावनाओं के मुक्त प्रवाह का अवसर है। यह वह दिन है जब सामाजिक औपचारिकताएं कुछ ढीली पड़ जाती हैं और मन के छिपे हुए जज़्बात सहज रूप से बाहर आने लगते हैं। हिंदी सिनेमा ने इस सांस्कृतिक मनोविज्ञान को बहुत बारीकी से समझा और होली को प्रेम की अभिव्यक्ति के सबसे प्रभावी सिनेमाई माध्यमों में बदल दिया। परदे पर रंगों की उड़ती बौछारों के बीच अक्सर वे बातें कह दी जाती हैं, जो सामान्य परिस्थितियों में कहना मुश्किल होता है। इसीलिए हिंदी फिल्मों में होली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि कहानी को आगे बढ़ाने वाला सशक्त उपकरण बन गई। ब्लैक एंड व्हाइट दौर से ही फिल्मकारों ने होली को रोमांस के प्रतीक की तरह इस्तेमाल किया। 1957 की क्लासिक फिल्म 'मदर इंडिया' का गीत 'होली आई रे कन्हाई' इस बात का उदाहरण है कि उस समय होली को जीवन की कठिनाइयों के बीच कुछ पलों की खुशी के रूप में चित्रित किया जाता था। उस दौर में प्रेम प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि प्रतीकों में व्यक्त होता था। नायक यदि नायिका के पल्लू पर हल्का सा गुलाल लगा दे या दूर से रंग उछाल दे, तो वही उसके अनुराग का संकेत माना जाता था। मर्यादा के भीतर रहकर भावनाओं को अभिव्यक्त करना ही उस समय की सिनेमाई खूबसूरती थी।

इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 1970 की फिल्म' कटी पतंग' में होली का दृश्य हिंदी सिनेमा के सबसे भावनात्मक क्षणों में गिना जाता है। गीत 'आज न छोड़ेंगे बस हमजोली' के दौरान रंगों की आड़ में नायक-नायिका के मन के छिपे भाव सामने आते हैं। राजेश खन्ना और आशा पारेख के किरदारों के बीच उभरता आकर्षण दर्शकों को दिखाई देता है। परंतु, नायिका अपने अतीत के बोझ से दबी हुई है। उल्लास से भरे इस दृश्य में कैमरा उसके चेहरे की झिझक और द्वंद्व को भी उजागर करता है। यहां होली केवल प्रेम का उत्सव नहीं, बल्कि कहानी में निर्णायक मोड़ का संकेत बन जाती है। रंग प्रेम के साथ-साथ सच उजागर होने की आशंका का भी प्रतीक बनते हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाली फिल्म 'नदिया के पार' में होली की सादगी भरी झलक मिलती है, जहां त्योहार पारिवारिक आत्मीयता से जुड़ा है। वहीं 'डर' में होली जुनून और एकतरफा प्रेम के खतरनाक आयाम को सामने लाती है। रंगों के बीच छिपा दीवानापन कहानी को तनावपूर्ण बना देता है। इस तरह अलग-अलग दौर में होली ने कथानक को नए अर्थ दिए हैं। सत्तर और अस्सी का दशक आते-आते होली फिल्मों में इज़हार-ए-मोहब्बत का सबसे सशक्त मंच बन गई। राज कपूर की फिल्मों में त्योहारों का चित्रण हमेशा सामाजिक दर्शन से जुड़ा रहा। इस क्रम में 'कोहिनूर' जैसी फिल्मों में होली के गीत प्रेम और सामुदायिक सौहार्द का ताना-बाना बुनते हैं। उस समय प्रेम को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करना आसान नहीं था, इसलिए रंगों के बहाने स्पर्श भी पवित्र प्रतीक में बदल जाता था। दिलीप कुमार और मीना कुमारी जैसे कलाकारों की फिल्मों में भावनात्मक तड़प होली के गीतों में खुलकर व्यक्त होती थी।

1975 में आई फिल्म 'शोले' ने होली को कथा-निर्माण के एक अहम उपकरण के रूप में स्थापित किया। 'होली के दिन दिल खिल जाते हैं' गीत केवल उत्सव का दृश्य नहीं था; यह बसंती और वीरू के रिश्ते को सार्वजनिक स्वीकृति देने वाला क्षण भी था। रंगों की उमंग के साथ ही फिल्म के खलनायक की छाया भी दर्शकों को आने वाले संकट का संकेत देती है। यहाँ होली आनंद और आशंका दोनों का संगम बन जाती है। फिल्मों में जब भी नायक-नायिका के बीच झिझक कम करनी होती है, होली का दृश्य रच दिया जाता है। कई बार इसमें भांग का तत्व जोड़कर हास्य और सहजता पैदा की जाती

है। नशे की हल्की खुमारी पात्रों को वह साहस देती है, जिससे वे अपने मन की बात कह सकें। यह फार्मूला दशकों से सफल रहा है। 'बागबान' में मैच्योर मोहब्बत की गरिमा भरी होली दिखाई देती है, जबकि 'टू स्टेट्स' में आधुनिक परिवेश का रंगीन उत्सव है, जहां दो संस्कृतियां रंगों के बीच एक-दूसरे को स्वीकारती हैं। आधुनिक दौर में 'बद्रीनाथ की दुल्हनिया' और 'गलियों की रासलीला राम-लीला' जैसी फिल्मों ने होली को अधिक साहसी और दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया। पहले में बद्री का रंग लेकर वैदेही के पीछे भागना और दूसरे में रंगों के बीच पहला स्पर्श ये दृश्य त्योहार के उस 'लाइसेंस' को दर्शाते हैं, जहां छूना उत्सव का हिस्सा माना जाता है। निर्देशक संजय लीला भंसाली की शैली में तो लाल गुलाल प्रेम की तीव्रता का दृश्यात्मक प्रतीक बन जाता है।

होली और प्रेमकथा की चर्चा अमिताभ, रेखा और जया 'सिलसिला' के बिना अधूरी है। निर्देशक यश चोपड़ा ने इस फिल्म में त्योहार को जटिल रिश्तों की पृष्ठभूमि में रखा। 'रंग बरसे' गीत दबे हुए जज़्बातों का विस्फोट है, जहाँ सामाजिक बंधनों के बावजूद प्रेम मुखर हो उठता है। रंगों और भांग की धुंध नायक को वह साहस देती है कि वह अपने हृदय की बात दुनिया के सामने रख सके। यहाँ होली केवल उल्लास नहीं, बल्कि स्वीकारोक्ति का क्षण है। नब्बे के दशक में 'मोहब्बतें' ने होली को परंपरा के विरुद्ध विद्रोह के प्रतीक के रूप में पेश किया। कठोर अनुशासन के बीच रंगों का उत्सव युवाओं को प्रेम की स्वतंत्रता का संदेश देता है। वहीं 'ये जवानी है दीवानी' के गीत 'बलम पिचकारी' में आधुनिक युवाओं का बेफिक्र अंदाज़ दिखता है, जहां नायिका संकोच छोड़कर बराबरी से प्रेम और मस्ती में शामिल होती है। यह बदलते समाज का संकेत है, जहाँ प्रेम अधिक खुला और आत्मविश्वासी है।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिंदी सिनेमा में होली केवल सजावट का माध्यम नहीं रही। यह भारतीय समाज की उस मानसिकता को दर्शाती है, जहाँ त्योहारों के अवसर पर संबंधों को नई परिभाषा मिलती है। रंग व्यक्ति की पहचान को कुछ क्षणों के लिए धुंधला कर देते हैं अहम, झिझक और दूरी सब मिट जाती है। जब चेहरा रंगों से भर जाता है, तो व्यक्ति केवल प्रेमी रह जाता है। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों की संकोची होली से लेकर आज की चकाचौंध भरी प्रस्तुतियों तक, इस त्योहार ने हर दौर में प्रेम की कहानी को नया आयाम दिया है। कभी यह संकोच मिटाने का जरिया बनी, कभी विद्रोह का प्रतीक, तो कभी सत्य की स्वीकारोक्ति का मंच। नायक और नायिका के लिए होली वह सुरक्षित आवरण रही है, जिसके पीछे वे अपने दिल की बात कह सकें और समाज भी इसे सहजता से स्वीकार कर ले। आख़िरकार, हिंदी सिनेमा में होली एक जीवंत रंगमंच है जहाँ गुलाल की एक हल्की परत प्रेम की गहराई को उजागर कर देती है। यह त्योहार बताता है कि मोहब्बत को कहने के लिए हमेशा शब्दों की ज़रूरत नहीं होती; कभी-कभी रंग ही सबसे सशक्त भाषा बन जाते हैं। वर्षों से परदे पर उड़ते ये रंग हमें यही याद दिलाते रहे हैं कि प्रेम, चाहे जितना संकोची क्यों न हो, फागुन की मस्ती में अपना रास्ता खोज ही लेता है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अशोक जोशी

आरके स्टूडियो का पुनर्जन्म

गीत हमारे प्यार की दोहराएंगी जवानियां

फ़िल्मी दुनिया का कपूर घराना 'आरके स्टूडियो' को मुंबई में फिर शुरू करने जा रहा है। रणबीर कपूर ने अंधेरी ईस्ट की एक कमर्शियल बिल्डिंग की पांच मंजिलों के लिए 20 साल का पट्टा हासिल कर लिया।

परिवार की योजना एक आधुनिक फिल्म स्टूडियो बनाने की है। रणबीर कपूर इस तरह अपने दादा राज कपूर के आरके स्टूडियो को फिर से उसी रूप में लाने की कोशिश शुरू कर दी। इस स्टूडियो में 2017 में एक सीरियल की शूटिंग के दौरान आग लग गई थी और 2019 में इसे बेच दिया गया था।

मुंबई के दूरदराज इलाके चेम्बूर की सड़क से हर आने जाने वाले की निगाहें उस जगह पर अचानक ठहर जाती थी जहां हाथ में गिटार लिए एक युवक एक युवती को थामे हुए रहता था। यह था राज कपूर के सपनों का मुकाम आरके स्टूडियो जहां आज गोदरेज आरके का बोर्ड लगा है। आग फिल्म के बाद बने इस स्टूडियो का अंत भी 2017 को लगी भयावह आग से हुआ जिसमें यह स्टूडियो और इसमें रखी राज कपूर के सपनों सी सुंदर यादें जलकर राख हो गई थी। तभी से यह लगने लगा था कि आरके स्टूडियो के साथ ही राज कपूर युग का अंत हो गया है। लेकिन, राज कपूर और उनके प्रशंसकों के लिए खुशखबरी है कि उनके पोते रणबीर कपूर ने एक बार फिर आरके स्टूडियो को जीवित कर आरके की धरोहर को फिर से स्थापित करने का विचार किया है।

आरके स्टूडियो की स्थापना राज कपूर ने 1948 में की थी। कहा तो यह भी जाता है कि इसके निर्माण के लिए नर्गिस ने अपने आभूषण तक बेच दिए थे। एक तरह से वह भी आरके का ही एक हिस्सा थी, जो अपनी शादी के बाद इससे पूरी तरह से जुदा हो गई। आरके बैनर तले बनी आखिरी फिल्म 1999 में 'आ अब लौट चलें' थी। फिल्म निर्माण न होने के दौरान भी परिवार ने इस संपत्ति का उपयोग प्रॉप्स, कॉस्टयूम और अन्य यादगार वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए किया। 2017 में एक दैनिक टेलीविजन शो की शूटिंग के दौरान आग लग गई, जिससे स्टूडियो को काफी नुकसान हुआ। आग लगने की घटना के दो साल बाद जमीन को एक आवासीय परिसर के निर्माण के लिए बेच दिया गया।

खबर है कि कपूर परिवार मुंबई में राज कपूर के आरके स्टूडियो को फिर से शुरू करने जा रहा है। जानकारी के अनुसार रणबीर कपूर ने अंधेरी ईस्ट स्थित एक व्यावसायिक इमारत में पांच मंजिलों के लिए 20 साल का पट्टा हासिल कर लिया है। परिवार का इरादा एक आधुनिक स्टूडियो बनाने का है। बताया जाता है कि रणबीर कपूर ने आरके स्टूडियो को अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने के लिए पांच मंजिलों का 20 साल का पट्टा हासिल

किया है। रणबीर कपूर अपने दादा राज कपूर के मशहूर आरके स्टूडियो को फिर से जीवंत करने जा रहे हैं। मुंबई के चेंबूर स्थित यह संपत्ति 2019 में एक आवासीय परियोजना के लिए खरीदी गई थी। लेकिन, अभिनेता इसे नए सिरे से शुरू करने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने मुंबई के अंधेरी पूर्व में स्थित कनकिया वॉल स्ट्रीट कमर्शियल बिल्डिंग की पांच मंजिलों को 20 साल के लिए लीज पर लिया है। इसलिए कि वे अपने परिवार के साथ आरके स्टूडियो को पुनर्जीवित कर सकें।

यह जगह लगभग ढाई लाख वर्ग फुट में फैली है। रणबीर के अलावा इस परिसर में उनकी मां नीतू कपूर चाचा रणधीर कपूर और उनकी चचेरी बहनें करिश्मा कपूर और नताशा नंदा के कार्यालय भी होंगे। यहां फिल्म निर्माण में सहयोग के लिए प्रत्येक मंजिल पर अत्याधुनिक तकनीक उपलब्ध होगी। इस अत्याधुनिक स्टूडियो में मेकअप रूम, स्क्रीनिंग रूम और पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए एक मंदिर भी होगा। रणबीर और करिश्मा स्टूडियो के संचालन की देखरेख करेंगे। नए आरके की पहली मंजिल पर वर्चुअल प्रोडक्शन की सुविधा होगी, जिसमें 15 हजार वर्ग फुट में फैला एक मुख्य एलईडी वॉल्यूम साउंड स्टेज होगा, जो 1.5 मिमी पिक्सेल.पिच एलईडी पैनलों से सुसज्जित होगा, जिन्हें 270ए घुमावदार लेआउट में व्यवस्थित किया गया है। ताकि 60 एफपीएस पर वास्तविक समय रे.ट्रेस्ड वातावरण बनाया जा सके। साथ ही चार अतिरिक्त वर्चुअल प्रोडक्शन साउंडस्टेज होंगे जो हाई.स्पीड नेटवर्किंग के माध्यम से एआई सर्वर फार्म से जुड़े होंगे।

दूसरी मंजिल विजुअल इफेक्ट्स और फैमिली ऑफिस के लिए समर्पित होगी, जिसमें 800 नोड वाला एआई.एक्सेलरेटेड सर्वर फार्म भी शामिल होगा। इसके बाद वाली मंजिल संगीत और एडिटिंग पर केंद्रित होगी। यहां 12 म्यूजिक रिकॉर्डिंग स्टूडियो, 25 डिजिटल एडिटिंग 8 डबिंग सूट और एक केंद्रीय मिनी मंदिर होगा। चौथी मंजिल पर निजी स्क्रीनिंग के लिए 200 सीटों वाली दो स्क्रीन और 30 पोस्ट.प्रोडक्शन वितरण कक्ष होंगे। पांचवीं मंजिल पर 40 आलीशान ग्रीन रूम सुइट तथा 400 कर्मचारियों के लिए एक कैफेटेरिया और 12000 पुरानी आरके वस्तुओं के लिए एयरकंडीशनिंग स्टोरेज की व्यवस्था होगी। बीएमसी के नियमों के अनुपालन में ऊंची इमारतों के लिए अग्नि सुरक्षा संबंधी एनओसी और औद्योगिक विद्युत भार संबंधी स्वीकृतियां प्राप्त कर ली गई हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि बीएमसी द्वारा उपयोगकर्ता प्रमाणपत्र परिवर्तन का अंतिम अनुमोदन अभी लंबित है। इसके अगले माह तक प्राप्त होने की उम्मीद है। कैफेटेरिया के लिए एफएसएसएआई लाइसेंस अप्रैल 2026 तक मिलने की उम्मीद है। सभी स्वीकृति प्राप्त होने के बाद संचालन जून में शुरू होने की संभावना है।

अच्छी ,खबर तो यह है कि इसका संचालन भी पारिवारिक वातावरण में होगा। इसके लिए रणबीर और करिश्मा नए रूप में एक साथ आकर आरके स्टूडियो का नेतृत्व करेंगे . पारिवारिक स्टूडियो को पुनर्जीवित करने के लिए व्यापक चर्चाओं के बाद आदर जैन के इस्तीफे के बाद करिश्मा कार्यकारी निदेशक का पद संभालेंगी। रणधीर कपूर अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे जबकि रणबीर प्रबंध निदेशक का पदभार ग्रहण करेंगे। रीमा जैन बोर्ड सदस्य होंगी। नीतू, नितशा, रीमा और करिश्मा निदेशक के रूप में उनकी सहायता करेंगी। इसके अलावा यह भी पता चला है कि आगे चलकर यहां आर के बैनर की फिल्में भी बनेंगी जिनका

निर्देशन रणबीर कपूर ही करेंगे। तब तो निश्चय ही राज कपूर के गीत की यह पंक्तियां चरितार्थ हो उठेंगी रातों दसों में कहेंगी अपनी कहानियां गीत हमारे प्यार की दोहराएगी जवानियां।

सिद्ध हैं तो गिद्ध भी रहेंगे !

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

प्र गिद्ध-समुदाय की आपातकालीन बैठक **में इस बात** पर विचार-विमर्श हो रहा था कि ऐसा क्या हो गया कि यकायक हमारी गिनती होने लगी। एसआइआर का तो पता है कि घुसपैठियों को निकाल बाहर करने के लिए चल रही है, लेकिन हम गिद्धों ने ऐसा क्या जुल्म कर दिया कि हमारी भी गणना की जाने लगी।

किसी ने अंदर की खबर बताई कि जिस तरह छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में नक्सलियों का आखिरी दौर चल रहा है, तो कहीं हमारे साथ भी तो ऐसा ही नहीं होने वाला है कि 'और कितने बचे हैं।' वैसे भी हम गिद्ध तो बहुत दूर निकल गए हैं कि शहर में ही कुल जमा दस नहीं मिले। हमारी बड़ी आबादी तो जंगलों में चली गई है। क्या ये चाहते हैं कि बाकी भी आत्मसमर्पण कर दें या शहर छोड़ जाएं!

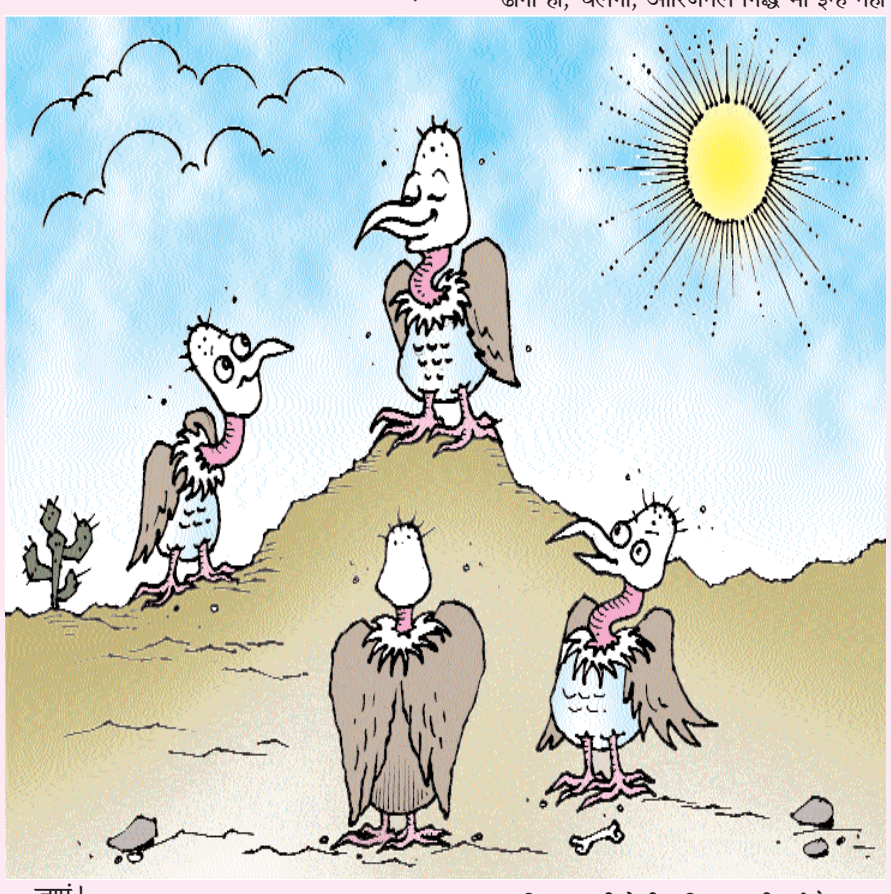

हर बार से आधे गिद्ध भी बैठक में नहीं थे। कई को डर था, कहीं गिनती करने वाले ना आ धमकें। वैसे सरकारी अमला तो घर बैठे भी गिनती करने में माहिर होता है। जब एक कमरे के घर में सौ वोटर हो सकते हैं तो गिद्ध तो कितने ही बता सकते हैं।

''मुझे लगता है कि हमारी आबादी कम हो रही है, इसलिए यह गिनती की जा रही है।'' युवा गिद्ध ने अपना मंतव्य जाहिर किया।

''हम गाय की तरह समाज में पूजे तो जाते नहीं हैं, जो कम होने पर अफसोस हो, ना ही हमारे लिए इंसानों के मन में कोई सम्मान का भाव है। जटायु को कितने लोग गिद्ध मानते हैं, वही हालत है कि आज गांधी और नेहरू को भी ये लोग नहीं मानते तो हमें क्यों जटायु-वंशज मानने लगे।'' वयोवृद्ध गिद्ध ने अनुभव का सार बताया।

''ऐसा भी नहीं है कि हमारे बगैर मनुष्य का काम चल जाएगा। जब भी इंसान दूसरे को बुरा बताना चाहता है, हमारा ही तो नाम लिया जाता है। मनुष्यों के साथ यही दिक्कत है कि उन्हें बुरा सिर्फ पशु-पक्षी के नाम से ही समझ आता है। मजेदार बात यह है कि ज्यादातर तो जानते ही नहीं कि पशु या पक्षी में क्या अच्छाई या बुराई होती है। सब कहते हैं तो बाकी भी मानते चले जाते हैं।'' वह रुका और फिर बोला- ''बताइए गधे से बेहतर मेहनती कौन होगा, लेकिन हर बाप अपने नालायक लड़के को गधा तो कहता ही है। हर शाख पर उल्लू यदि बैठे भी हैं तो किसी का क्या ले रहे हैं, लेकिन बताया यूं जाता है कि चमन उजाड़ने का ठेका इनके ही पास है। गनीमत है, गरीबों की बस्तियां उजाड़ने में जानवर का योगदान नहीं बताया किसी ने, लेकिन इस हरकत को कहेंगे जानवर वाली ही।'' ये पशु-प्रेमी गिद्ध का वक्तव्य था।

''हमें तो अभी यह विचार करना है कि हमारी गिनती क्यों की जा रही है, कहीं चुनाव तो नहीं आ रहे हैं?''

''असल बात कुछ और है...!''

बुजुर्गवार गिद्ध ने खंखारते हुए कहा- ''समाज में सिद्ध की तुलना हमेशा गिद्ध से की गई है। याद नहीं होगा तुम जेन-जी को... एक कवि थे, जो सिर्फ हमारे नाम पर जीवन भर कविता पढ़ते रहे और कमाते रहे। उनकी पहचान ही 'गिद्ध-कवि' की हो गई थी। उनकी कविता मुझे आज भी याद है- 'ये गिद्धों का वतन है कि ये सिद्धों का वतन है, किसका वतन है ये कहो किसका वतन है।'अर्थात् इस देश में सिद्ध कितने ही ढोंगी हों, चलेगा, ओरिजनल गिद्ध भी इन्हें नहीं चाहिए। हमारी ऐसी छवि बना दी गई है।''

उनकी आंखें झरने लगीं। रुमाल से पौंछ कर फिर कहने लगे- ''इनकी असल चिंता यह नहीं है कि हम कम हो रहे हैं। इन्हें तो डर है कि यदि हमारी नस्लें खत्म हो गईं तो फिर आने वाली पीढ़ी तो सवाल करेगी ना कि ये गिद्ध होते क्या थे। कुत्तों ने मालिकों से नाम लेकर खुद को कुत्ता मानने से ही इनकार कर दिया है और अब तो समाचार-पत्र भी कुत्ते काटे से बचने के लिए 'श्वान' लिखने लगे हैं। इन्हें गाली का जो आनंद कुत्ता कहने में आता है, अब 'श्वान' में कहां। तो हम ही बचे हैं और हमें बचाए रखना इनकी मजबूरी है। सुना है कई बार 'ये नेता नहीं गिद्ध है, लाश पर वोट मांगता है।' जब गिद्ध होंगे ही नहीं तो ऐसे कहे का क्या मतलब रह जाएगा, जैसे डायनासोर! इसलिए हमें फिक्र करने की जरूरत नहीं है। जब तक समाज में भ्रष्टाचार, अन्याय और नफरत है, हमारे वजूद पर कोई संकट नहीं आने वाला। और ऐसा तो संभव ही नहीं है कि कभी ऐसा राज्य आ पाएगा इस हिंदू-राष्ट्र में, क्योंकि तब सभी को समान सम्मान देना होगा, जो आज धर्म और जाति के हिसाब से दिया जा रहा है।''

गिद्ध पंचायत बर्खास्त हो गई और उस तरफ उड़ चली, जहां अभी-अभी किसी गाड़ी से टकरा कर गौ-माता का स्वर्गवास का एसएमएस आया है!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

महिला दिवस: क्या कह रही महिलाओं की ज़िंदगी

ह र बरस, हर क्षेत्र में विभिन्न चीजों का आकलन होता है उनका स्टेट्स चैक होता है फिर क्यों ना हम देखें महिलाओं की स्थिति में क्या परिवर्तन आये उसके पहले हम देंखे हमारी महिलायें ''भारत में पहली महिला की सूची'' में कहाँ थी ये प्रथम की बात है आज तो उन पदो पे कई महिलायें विराजमान है जैसे

पहली महिला डॉक्टर - आनंदी गोपाल जोशी - 1887
पहली महिला शिक्षक - सावित्री बाई फुले - 1848
पहली महिला आई.पी.एस. अधिकारी- किरण बेदी - 1972
पहली महिला ऑटो रिक्शा चालक - शीला डावरे -1988
पहली महिला पायलट - सरला ठकराल - 1936
पहली महिला ट्रेन डायवर - सुरेखा यादव - 1988
पहली महिला रॉकेल पायलट - फ्लाइट लेफ्टिनेंट शिवांगी सिंह- 2017
पहली महिला सेना अधिकारी - कप्तान लक्ष्मी सहगल - 1943
पहली महिला अंतरिक्ष यात्री - कल्पना चावला - 2003
पहली महिला प्रधानमंत्री - इंदिरा गांधी - 1966- 77
पहली महिला इंजीनियर - ललिता अय्यनासाकतयलूना- 1919-1979
पहली महिला वकील - कार्नेलिया सोराबजी - 1894
पहली महिला राष्ट्रपति - प्रतिभा पाटिल - 2007
पहली महिला मुख्यमंत्री - श्वेता कृपलानी - 1963
पहली महिला अभिनेत्री - दुर्गाबाई कामत - 1914
पहली महिला लड़ाकू पायलट - भावना कंठ - 1916
पहली महिला न्यूरोसर्जन -तंजावुर संथनकृष्ण कनक - 1932 -2018
भारत की पहली महिला राज्यपाल -सरोजिनी नायडू - 1947 -1999
पहली महिला वैज्ञानिक - कमला सोहोनी - 1912-1988
पहली महिला आई.एफएस. - चोनिरा बेलिय्या -1949
पहली महिला रक्षा मंत्री - निर्मला सीतारमण -2017
पहली महिला उद्यमी - कल्पना सरोज - 2001
पहली महिला दंत चिकित्सक - विमल सूद - 1922-2021
पहली महिला अध्यक्ष (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) -एनी बेसेंट -1917
पहली महिला केन्द्रीय मंत्री - राजकुमारी अम्रता कौर -1947
पहली महिला अशोक चक्र पाने वाली - नीरजा भनोत - 1987
पहली महिला नोबेल पुरस्कार पाने वाली - मदर टेरेसा - 1979
पहली महिला मिस वर्ल्ड - सुश्री रीता फारिया -1966
पहली महिला ज्ञानपीठ पानी वाली - आशापूर्णा देवी - 1976
पहली महिला बुप्र पुरस्कार पाने वाली - अरुंधति राय - 1992
पहली महिला संगीतकार (भारत रत्न) - सुश्री सुब्बलक्ष्मी - 1916- 2004
पहली भारतीय महिला डब्ल्यू टी.ए. खिताब जीतने वाली - सानिया मिर्जा - 2005

भिन्न क्षेत्रों में दकियानूसी समाज में, विपरीत स्थितियों में अपना पहला कदम जमाने वाली महिलाओं को सलाम।

आज सुविधा है, संसांधन है, शिक्षा, धन, खुला दिमाग है तो इन्हीं क्षेत्रों में ढेरों महिलायें हैं।

चलिये अब देखते हैं महिलाओं को 2025 तक क्या कानूनी अधिकार मिलेः-

1 समानता का अधिकार
2 शिक्षा और विकास
3 कार्य स्थल पर अधिकार
4 स्वास्थ्य और सुरक्षा का अधिकार
5 संपत्ति का अधिकार
6 राजनीतिक भागीदारी 33 प्रतिशत आरक्षण

कानूनी सुरक्षा अधिनियम

1 घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम 2025
2 दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961
3 सती प्रथा (रोकथाम) अधिनियम 1987

ये कागज़ों पर मिले सरकार और कानून द्वारा प्रदत्त अधिकार है पर समाज और घरेलू सदस्यों द्वारा इनका कितना पालन होता है हम महिलायें इससे संतुष्ट नहीं है

2025 की ''नारी'' (नेशनल एनुअल रिपोर्ट एंड इंडेक्स ऑन वूमेंस सेफ्टी) के अनुसार देश में सबसे सुरक्षित शहर कोहिमा, विशाखापट्टनम, भुवनेश्वर और मुंबई है वहीं दिल्ली पटना जयपुर कम सुरक्षित शहरों में हैं।

अभी फिलहाल 2025 में देखें महिलाओं की क्या स्थिति है, वो कहाँ तक पहुंची। 2025 में भारत में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि रही। ग्रामीण महिलाओं के कुल बैंक खातों में वृद्धि 42 प्रतिशत हुई। महिला नेतृत्व वाली निजी कंपनियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई। शेयर बाजार में महिला निवेशकों का प्रभाव बढ़ते देखा जो भारतीय महिलाओं की बुद्धि और उत्थान का प्रतीक है। ग्रामीण श्रमबल में 61.1 प्रतिशत वृद्धि हो गई। भारतीय चुनावों में महिला सशक्तिकरण बढ़ चढ़ कर बोला। ए.आई., टेक्नोलॉजी में उतना सुधार नहीं दिखा, महिलाओं की स्थिति में भी अनिश्चितता है उन्हें अभी शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू जीवन में संरक्षा

में संघर्ष करना पड़ता है। पति-पत्नी दोनों कामकाजी होते हुये भी स्त्री को ही मैनेजमेंट देखना पड़ता है। महिला खातों की संख्या 6.67 मिलियन से बढ़कर 27.71 मिलियन हो गई है। घरेलू हिंसा, अशिक्षा, मानव तस्करी, लिंग भेद प्रजननसंबंधी संबंधी न्याय अभी भी बहुत है। हरियाणा इक ऐसा राज है जहां 1000 पे 879 महिलायें हैं। भारत में सबसे शक्तिशाली महिलायें निर्मला सीतारमण, रोशनी नादर मल्होत्रा और किरण शॉमजूमदार है। मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं है। केरल में सबसे ज्यादा महिलायें हैं पर वहाँ स्वास्थ्य शिक्षा का भी दर अच्छा है। इस बरस सबसे खूबसूरत हीरोइन भारत में कृति सेनन को माना गया।

अभी भी महिलाओं को घरेलू हिंसा, स्वास्थ्य, आर्थिक मजबूती, दिमागी मजबूती के लिए संघर्ष करना है, पर मेरा ऐसा मानना है कि इक महिला का दूसरी महिला के सहयोग की आवश्यकता है और पूछने की इक दूसरे से और क्या कह रही है जिंदगी।

दृश्य में रंग

फोटो: गिरीश शर्मा

गज़ल

रंग ए इश्क

उमा त्रिवेदी

हवा के हाथ में खुशबू का इक पैगाम आया है,
निखारने मुझको फिर से बसंत का मौसम आया है।

उदासियों का पतझड़ काटकर अब मुस्कुराते हैं,
कि पीली ओढ़नी पहनकर सावन सा सुकूँ छाया है।

दिलों की क्यारियों में इश्क़ की कलियाँ चटकती हैं,
तुम्हारे साथ ने रूह को फिर से गुदगुदाया है।

न जाने कौन सी जादूगरी है इन हवाओं में,
कि हर इक फूल ने तेरा ही चेहरा याद दिलाया है।

जहाँ तक देखिए, बस स्वर्ण की चादर बिछी सी है,
ये धरती ने भी शायद आज प्रेम का त्यौहार मनाया है।

न जाने कब से प्यासी थी मेरे जज़्बात की क्यारी,
मगर इस साल बसंत %%रंग-ए-इश्क÷ संग लाया है।

थोपी नहीं... ओढ़ी जाती है चुप्पी !

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

एंड्रयू की गिरफ्तारी की वजह यह भी है कि जिस वक्त एप्सटीन के साथ दोस्ती निभा रहे थे, उसी दौर में यूनाइटेड किंगडम के व्यापार दूत भी थे और इसी दौर में उन्होंने कुछ सरकारी कागज और इ-मेल एप्सटीन को भेजे। सबूत मिले हैं कि कुछ मेल तो एंड्रयू को मिलने के फकत पांच मिनट में ही एप्सटीन के पास भेज दिए गए। इतना ही नहीं, यही वो दौर था, जब एप्सटीन को कम उम्र लड़कियों की सेक्स ट्रैफिकिंग के जुर्म में सजा हुई थी, लेकिन एंड्रयू को फर्क नहीं पड़ा। जिस तरह से इस गिरफ्तारी के बाद किंग चार्ल्स की तरफ से बयान आया है कि कानून को अपना काम करने देना है और राजपरिवार पूरी तरह से इस केस में मदद करने के लिए तैयार है, बताता है कि मुद्दे सिर्फ दो-तीन इ-मेल भेजने या कम उम्र लड़कियों के साथ बिताने के नहीं हैं, बात सत्ता की है।

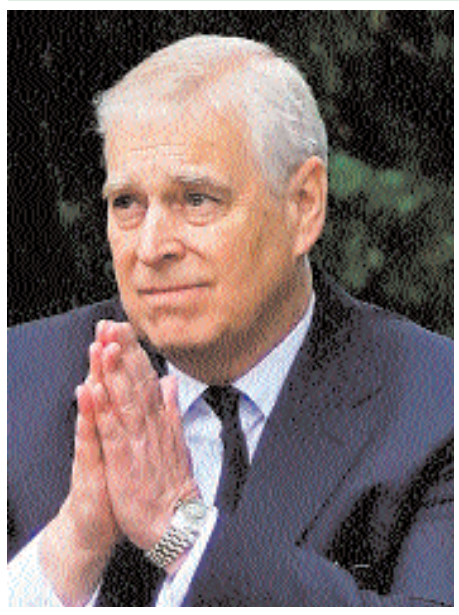

पहली बार एप्सटीन और गीऊफ्रे के साथ एंड्रयू का फोटो आया था, तब से ऐसा कोई दिन नहीं गया, जब एंड्रयू को कोसा नहीं हो। जिस वक्त वर्जिनिया या उस जैसी कम उम्र लड़कियों के साथ एप्सटीन की मेहमाननवाजी का फायदा उठा रहे थे, उस समय उनकी खुद की दो लड़कियां लगभग उसी उम्र की थीं।

एंड्रयू की गिरफ्तारी की वजह यह भी है कि जिस वक्त एप्सटीन के साथ दोस्ती निभा रहे थे, उसी दौर में यूनाइटेड किंगडम के व्यापार दूत भी थे और इसी दौर में उन्होंने कुछ सरकारी कागज और इ-मेल एप्सटीन को भेजे। सबूत मिले हैं कि कुछ मेल तो एंड्रयू को मिलने के फकत पांच मिनट में ही एप्सटीन के पास भेज दिए गए।

इतना ही नहीं, यही वो दौर था, जब एप्सटीन को कम उम्र लड़कियों की सेक्स ट्रैफिकिंग के जुर्म में सजा हुई थी, लेकिन एंड्रयू को फर्क नहीं पड़ा। जिस तरह से इस गिरफ्तारी के बाद किंग चार्ल्स की तरफ से बयान आया है कि कानून को अपना काम करने देना है और राजपरिवार पूरी तरह से इस केस में मदद करने के लिए तैयार है, बताता है कि मुद्दे सिर्फ दो-तीन इ-मेल भेजने या कम उम्र लड़कियों के साथ बिताने के नहीं हैं, बात सत्ता की है।

साफ समझ आता है कि एपस्टीन की फाइलें दबाई नहीं गईं, उन्हें प्रोसेस किया गया। सिलसिलेवार आरोप के बजाय स्कैंडल के तौर पर सामने आईं। यह सच सामने आता है कि प्रेस की आजादी जवाबदेही की गारंटी नहीं देती, जब मीडिया संस्थान उनमें शामिल हों, जिनकी जांच करने का दावा करते हैं। सवाल यह नहीं है कि पत्रकार हिम्मत वाले हैं या नहीं, बल्कि यह है कि क्या हालात उन ताकतवर और पैसे वालों की लगातार आलोचना करने की मुखालफत की इजाजत देते हैं। जरूरी बात यह है कि चुप्पी थोपी नहीं जाती, सोची-समझी ओढ़ी होती हैं, जो मीडिया की राजनीति और कमाई के मुताबिक निकलती है।

बीबीसी के एमिली मैटिलिस के साथ (2019) इंटरव्यू में साबित हो चुका था कि एंड्रयू झूट बोल रहे हैं, लेकिन फिर भी उनको बचाया, लाखों पाउंड्स देकर वर्जिनिया की आवाज को खामोश किया, लेकिन एपस्टीन फाइलों ने दिखाया कि कैसे ताकतवर लोग और राजशाही जैसे संस्थान ऐसे झटकों को झेलते हैं और उसे स्कैंडल में बदल देते हैं। अब देखना यह है कि क्या किंग चार्ल्स की कोर्ट में किंग के भाई पर मुकदमा चलेगा या नहीं!